'साहित्य-मण्डल-माला' की बीसवीं पुस्तक—

चार्ली चैप्लिन

[विलियम डॉजसन बोमैन लिखित]

अनुवादक—

आनन्द देव

प्रकाशक—

मूल्य एक रुपया

निवेदन

चार्ली चैप्लिन एक अन्तर्राष्ट्रीय महापुरुष है। सारा संसार उसकी कला पर रोता और हँसता है। इस समय इस अद्भुत पुरुष को जितनी आर्थिक आय और जितना सम्मान प्राप्त है, उसे जानकर हमारे ग़रीब देश निवासी आश्चर्य किये बिना नहीं रह सकते। किस प्रकार यह कला का अवतार कूड़े की ढेरी से निकल-कर पर्वत-शृङ्ग पर जा पहुँचा, और उसके छोटे से जीवन के अल्प-कालीन इतिहास में कैसी-कैसी मनोरञ्जक घटनायें घटित हुईं, इस-का ज्ञान आज बहुत कम लोगों को है।

हिन्दी भाषा में इस महान् मेधावी कलाकार के विषय में एक अक्षर भी उपलब्ध नहीं। इसी कमी का अनुभव करके मैंने विलियम डॉजसन बोमैन-महाशय की पुस्तक Charlie Chap-line, his Life and Art का हिन्दी-अनुवाद पाठकों के सम्मुख रक्खा है। आशा है, पाठकगण इस पुस्तक का हृदय से स्वागत करेंगे।

मैंने अनुवाद में कहीं-कहीं स्वच्छन्दता बर्ती है, और एकाध स्थान पर कुछ मैटर घटा-बढ़ा दिया है, जिससे भारतीय पाठकों के लिये इस पुस्तक की उपादेयता बढ़ गई है।

—अनुवादक।

चार्ली चैप्लिन

चार्ली चैप्लिन

पहला परिच्छेद

—※—

आजकल दुनियाँ में प्रबल लोक-मत सब से बड़ी शक्ति है, और सिनेमा का कैमरा इसका प्रधान शस्त्र समझा जाता है। उसके द्वारा तैयार किये गये चित्रपट संसार के कोने-कोने में पहुँच जाते हैं, इसीलिये कैमरे को उपरोक्त महत्व दिया गया है।

गायन की तरह चित्रपट भी प्रत्येक देश-वासी और प्रत्येक भाषा-भाषी का न्यूनाधिक मनोरंजन करते हैं। बल्कि उनके भाव तो इतने स्पष्ट और हृदय-ग्राही होते हैं कि अशिक्षित से अशिक्षित व्यक्ति भी उन्हें समझ लेता है। दुनियाँ के लाखों आदमी, जिन्होंने वर्तमान आविष्कारों की जानकारी के लिये कभी कोई पुस्तक नहीं पढ़ी, अब चित्र पट की सहायता से विस्तृत संसार का अनुभव प्राप्त करने लगे हैं। चित्रपट का यह कल्पनातीत चमत्कार देख-देख-कर उनकी आँखें खुलती जाती हैं।

इस कला के प्रमुख नेता चार्ली चैप्लिन ने बहुत अधिक सफलता प्राप्त की है। और चित्रपट की सहायता से संसार में उन्होंने एक नवीन धारा बहा दी है। यदि उनका जन्म सत्तर वर्ष पहले होता तो वे चित्रपट के अभिनेता न होकर

केवल एक विख्यात गायक होते। उस अवस्था में वे अमे
रिकन और अँग्रेज-जाति का सम्मान तो अवश्य प्राप्त करते
और लाखों की दौलत के मालिक भी बनते, और सम्भवतः
अपने मजाक़िया लेखों और गानों से लोगों को खूब हँसाते
भी, परन्तु तब अँग्रेजी-भाषा-भाषी जनता के अतिरिक्त
सारी दुनियाँ उनकी प्रतिभा से वंचित रहती।

वास्तव मे उनका भाग्य बडा बलवान था। कैमरे की
सहायता से उनका कार्य क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होगया
अगर उनका जन्म कहीं सौ साल पहले होता, तब तो शायद
कोई चिडी का पूत उन्हें जान भी न पाता। शायद उनके
जन्म समय में सारे शुभ नक्षत्रों का योग था। किसी देश
के या किसी जाति के एक भी मनुष्य ने अपनी कार्य पटुता
द्वारा विश्व के करोडों व्यक्तियों को कभी हँसाकर, कभी
रुलाकर वह असीम धन-राशि और करोड़ों व्यक्तियों का
वह आदर और प्रेम प्राप्त नहीं किया, जिसके लिये बड़े-बड़े
सम्राट् तरसते हैं, और जो आज चार्ली चैप्लिन को अना
यास ही सुलभ हैं।

सर्व-साधारण की दृष्टि मे चार्ली का एक अजीब रूप
अंकित होगया है। जिस समय वह बनावटी गम्भीरता
और स्वाभिमान का प्रदर्शन करता है, उस समय उसका
विचित्र बेत, झुकी हुई उसकी तिरछी मूछें, पागलों
की-सी पोशाक और उसका बेडौल शरीर हमारे दिल को

कली खिला देता है। चार्ली का अभिनय उत्कृष्ट होने के साथ ही साथ एक-दम स्वाभाविक है,–मानो सोने में सुगन्ध है। उसकी कार्य-क्षमता की तुलना में हमारे उपरोक्त शब्द अत्यन्त तुच्छ हैं। यद्यपि उसका अभिनय केवल मूक चित्रपटों में ही होता है, किन्तु वास्तव मे उसकी प्रत्येक भाव-भंगी मुँह से बोल उठती है, जिसके समझने में ज्यादा दिक्कत पेश नहीं आती।

चार्ली चैप्लिन की ख्याति का कारण केवल उसकी अभिनय-कला ही, सो बात नहीं। उसका जीवन मौलिकता से परिपूर्ण है। विख्यात महा-पुरुषों की भाँति उसका मस्तिष्क भी सदा जगह-जगह उड़ता फिरता है, और वह अनोखी भावनाओं में तल्लीन रहता है। उसकी प्रतिभा की असीम शक्ति का अनुमान अभी तक कोई नहीं लगा पाया, और उसके विद्वान् मित्र अकसर उसकी प्रतिभा और सूक्ष्म देखकर स्तम्भित हो जाते हैं। वह एक सुन्दर लेखक और चतुर अभिनेता है,तथा अपने हरेक काम में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर चुका है।

यहीं पर बस नहीं। यों मोटी आँख से देखने पर वह उन्नति के शिखर पर दिखाई देता है, पर यदि कोई यह कहे कि उसने अपना लक्ष्य पूर्ण रूप से प्राप्त कर लिया है, और अब उसे आगे कुछ करने के लिये नहीं बचा है, तो यह बड़ी भारी भूल होगी।

दूसरा परिच्छेद

—※—

रानी विक्टोरिया के शासन-काल में उठते हुए नौजवान धनी-मानी पुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ा करते थे। धन कमाना उनका चरम ध्येय था। यह भावना अधिकांश में उन्हीं युवकों के मन में आती थी, जो धनी माता पिता की सन्तान होते थे, और जिनका बाल्य-काल ऐश्वर्य में बीतता था।

चार्ली चैप्लिन की स्थिति इससे बिलकुल भिन्न थी। उसका जन्म एक ऐसे दीन हीन घराने में हुआ था कि हम उसकी वर्तमान स्थिति देखकर स्तम्भित रह जाते हैं।

स्पेन्सर चार्ली चैप्लिन का जन्म १६ अप्रैल—सन् १९८९ ई० को लण्डन के 'कैनिंग्टन'-नामक ग्राम में हुआ था। चार्ली चैप्लिन के वंश के बारे में लोगों के अनेक कथन हैं। कोई कहता है कि उसका जन्म जिप्सी-जाति में हुआ है, और 'स्पेन की यात्रा'-नामी पुस्तक के लेखक के मत से उसका जन्म 'डन्' और 'म्याण्डी'-जाति में हुआ है। उसका वास्तविक नाम—चैप्लिन, अँग्रेजी और फ्रेंच के संयुक्त शब्द 'कैप्लिन' से निकला जान पड़ता है।

जहाँ तक पता चलता है, उससे सिद्ध हुआ है कि चैप्लिन के माता-पिता अँग्रेज थे। उसके पिता का नाम भी चार्ली चैप्लिन था। वह एक सफल गायक था, और उसने अपनी योग्यता के कारण सन् १८९० की 'लण्डन म्यूजिक कॉन्फ्रेंस' में जनता का विशेष सम्मान प्राप्त किया था। चार्ली की तरह वह भी एक ऊँचे दर्जे का ऐक्टर था। लोग कहते हैं कि चार्ली जिस समय बिलकुल बच्चा था, उसी समय उस का पिता न्यूयॉर्क की किसी नाट्य-शाला में कार्य करने गया था, परन्तु जहाँ तक हमें पता है, उसने कभी किसी दूसरे देश में कार्य नहीं किया।

जिस समय उसकी कीर्ति देश-देशान्तरों में फैल रही थी, अचानक उसकी मृत्यु होगई। यह समय चार्ली-परिवार के लिये अत्यन्त कष्टमय था,—खासकर चार्ली चैप्लिन और उनके भाई का तो अपना बचपन बडी तकलीफ़ में बिताना पड़ा।

चार्ली की माता हन्ना चैप्लिन भी एक अच्छी गाने वाली थीं। उन्होंने 'गिलबर्ट' और 'सुलेवान'—आदि खेलों में कार्य करनेवाले व्यक्तियों के साथ बडा नाम पाया। वे किसी नगर की एक बड़ी नाट्य-शाला में एक प्रधान अभिनेत्री थीं, इसलिये चार्ली को अपने बाल्य-काल में ही रंग-मंच पर आने की सुविधा मिल गई। उसकी माँ ने जब अपने नन्हें बच्चे का प्रथम बार अभिनय देखा, तो उसे

निश्चय होगया कि एक दिन उसका पुत्र अपने पिता से भी अधिक ख्याति-प्राप्त अभिनेता होगा। माता का हृदय अपने पुत्र की आशातीत उन्नति को देखकर गद्‌गद होगया। जब चार्ली हॉलीवुड में स्थायी रूप से नौकर होगया, उस समय वह अपने बच्चों के पास ही रहने के लिये 'कैनिंग्टन' से 'फिल्म-लैण्ड' चली गई। उसकी मृत्यु कैलीफ़ोर्निया के वैवर्ली-नगर में सन् १९२८ के अगस्त मास में हुई थी।

उसके पति की उस समय की मृत्यु, जबकि उसके बच्चे बिल्कुल ही निरीह थे, हन्ना चैप्लिन के लिये बहुत कष्टमय हुई। घर की चिन्ता उसे पेट पालन का भी कोई उपाय न करने देती थी। उधर बच्चों का भरण-पोषण तथा कैनिंग्टन-जैसे नगर में घर का साप्ताहिक किराया जुटाना भी उसके लिये कष्ट-साध्य था। ऑगस्टिन बिरेल के लेख तो यहाँ तक बताते हैं कि उन्हें अकसर एक समय खाकर दूसरे समय के भोजन का भी सहारा न रहता था।

चैप्लिन को अपने बाल्य-काल में और बालकों की तरह कभी कोई सुख प्राप्त नहीं हुआ। उसने अपने बचपन का प्राय सारा समय भूखे-प्यासे कैनिंग्टन की गलियों में बेकार फिरकर ही बिताया। घुड़साल के बाहर रक्खा हुआ वह पुराना टब, जिसमें चार्ली बचपन में नहाता था, उसने अपनी ख्याति के समय देखा, तो और वस्तुओं की अपेक्षा कुछ कम आश्चर्य-जनक न था। पड़ोस की वे छोटी-छोटी सड़कें और

गलियाँ, जिन्हें चार्ली अपना संसार समझता था, अवश्य ही उसे दुःखदाई लगी होंगी। अपनी अवस्था के अन्य सहस्रों बालकों के समान वह भी शारीरिक और मानसिक शक्ति से क्षीण था। उसका जीवन सुख और शक्ति से रहित था। पुस्तकें तो चार्ली-कुटुम्ब के लिये अमूल्य धन के समान ही थीं। अपने स्मृति-काल में शायद ही उसने कभी नगर की शान्ति और सुन्दरता से लाभ उठाया हो।

उदाहरणार्थ चार्ल्स का 'My Wonderful Visit'—नामक पुस्तक में वह साउदेम्पटन से लन्दन की यात्रा के विषय मे लिखते हुए कहता है कि घास अब पहले जितनी हरी नहीं मालूम होती। फिर कैनिंग्टन-पार्क के विषय मे लिखता है कि कैनिंग्टन पार्क कितना दुखमय है। सारे ही उद्यान दुःखमय हैं, क्योंकि वे सुनसान हैं। मनुष्य उनमें तभी जाता है, जब वह अकेला होता है। एकान्तता दुःख है, और इसी-लिये उद्यान दुःख की सजीव मूर्ति हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य की ओर उसका यह अज्ञान, उसकी बाल्य-काल की अशिक्षा के सिवा और क्या कहा जा सकता है? परन्तु वर्ड्सवर्थ की ये प्रसिद्ध पंक्तियाँ भी देखिये—

"कितना सुन्दर था वह स्थान—जहाँ की सुन्दर घाटियाँ, उद्यान और कलकल-नादिनी नदियाँ, पृथ्वी, तथा प्रत्येक दृश्य स्वर्ग के समान सुन्दर जान पड़ते थे! परन्तु आह! आज वह सुखमय स्वप्न नष्ट होगया, और उसकी स्मृति

की प्रतिध्वनि हृदय में आनन्द की अपेक्षा दुःख का संचार करती है।" कितना अन्तर है, दोनों लेखकों की विचार धारा में।

एक रात जब वह लन्दन के पुल पर अपने मित्रों के साथ घूम रहा था, उसने अकस्मात् रुककर प्रसिद्ध 'सेण्ट टॉमस' अस्पताल के भवन की ओर देखा। कुछ देर वह चुपचाप देखता रहा, अचानक एक खिड़की खुलने से प्रकाश बाहर आया, उसे देखकर उसने अपने मित्रों से कहा—"देखो, यह वही खिड़की है, जहाँ मेरे पिता की मृत्यु हुई थी। मैं उस समय बहुत छोटा था, परन्तु फिर भी वह समय न भूलूँगा। मैं इतना छोटा था कि यह भी न समझ सका कि इस मृत्यु से मेरा क्या भविष्य होगा। मैं सारी रात उसी खिड़की के नीचे सर्दी और अँधेरे में खड़ा रहा था, तथा मेरा सिसकता हृदय यह करुणामय समाचार सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था।" उसके नेत्रों में उस समय आँसू थे, और उसके चेहरे से दुःख के चिन्ह स्पष्ट प्रकट होते थे। वह पुनः कहने लगा—"देखो, उस कमरे में आग जल रही है। क्या तुम जानते हो कि यह क्या है? उसका तात्पर्य यह है कि इस समय वहाँ कोई मर रहा है, और हम उसे नहीं बचा सकते। हम अपनी समस्त शक्ति और धन से भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते।"

उसके मित्रों को अब तक इस बात का ज्ञान न था कि

वह वही चार्ली है। उनके नेत्रों के सामने एक प्रकाश आ-गया, और उन्हें चार्ली के अतीत-काल के एक एक दृश्य दिखाई देने लगे, जिनमें मनुष्य के वैभव तथा शक्तियों की तुच्छता स्पष्ट विदित होती थी।

अपनी आयु के तेरहवें साल में उसने दो भिक्षुकों को 'हार्मोनिका' और 'क्लार्नेट' के साथ एक गाना गाते सुना, जो प्राय तीस साल से प्रचलित था। यह गीत प्राय ही सुनाई देता था, और सड़क पर फिरनेवाले भिक्षुक तथा दफ्तरों के लड़के चिल्ला चिल्लाकर गाते हुए वृद्ध मनुष्यों को दुखित कर, उनके क्रोध-भाजन बनते थे।

परन्तु प्रत्येक हृदय की रुचि भिन्न होती है। अत चार्ली को इस गीत में आश्चर्य और सौन्दर्य की झलक आने लगी। वह कहता है कि मैं केवल यह जानता हूँ कि मैं उस गीत को प्रेम करता हूँ, और ज्यों-ज्यों वह गान मेरे मस्तिष्क में प्रवेश करता था, त्यों-त्यों मैं मस्त होता जाता था। उस गान में कुछ ऐसी शक्ति थी, जिसने मुझे पहले-पहल बताया कि गान विद्या वास्तव में क्या है।

यही चार्ली का अभिनय की ओर प्रथम आकर्षण था। वह कहता है कि उसके सुरस ने उसे दीवाना और मस्त बना दिया था। बाद में गान विद्या उसका प्रिय विषय ही नहीं, बल्कि उसके जीवन का ध्येय बन गया था। उसने अनेकों गीत अपने अवकाश के समय गाने के लिये एकत्र

किये थे। 'बालक' ' और 'नागरिक प्रकाश'-इत्यादि गीत यह अनेक रागों में प्राय पन्द्रह बाजों पर गाता था।

उसका प्रारम्भिक उद्योग उसके विचारानुसार सफल नहीं हुआ। वह लिखता है कि हम कई लडकों ने मिलकर एक बैंड बनाया था, जिसका नाम 'हैमर्स्मिथ हॉर्न पाइपर्स' रक्खा। हमने मालिक-मकान को किराया देने के लिये लोगों से कुछ रुपया भी एकत्र कर लिया था। परन्तु कुछ दिन बाद उसे तोड देना पडा।

वह कुछ रोचक दृश्यों का वर्णन करते हुए लिखता है, कि वह लडके, जिन्हें घर से हर रोज एकाध पैसा मिल जाता था, रात को नुमायश में मैजिक-लाल्टेन का तमाशा देखने एकत्र होते थे। प्रदर्शिनी में चलती फिरती तस्वीरें देखकर चार्ली को बड़ा आनन्द आता था, और यदि कभी उसे पैसा मिल जाता, तो वह भी वहाँ जाता था।

कैनिंग्टन-बाथ भी उस जिले का एक प्रसिद्ध स्थान था, जो चार्ली का एक विशेष आनन्द-दायक विषय था। वहाँ कोई भी व्यक्ति केवल तीन पैसे खर्च करने से जा सकता था। वहाँ और भी कितने ही लडके होते थे, जिनके साथ वह गलियों में नाना प्रकार के खेल खेला करता था। वह उन गलियों को प्रेम करता था, और अब भी उन्हें पसन्द करता है। लेम्बेथ वॉक, चस्टर स्ट्रीट और कैनिंग्टन रोड-आदि स्थान उसे अब भी उसी तरह याद हैं, कारण कि

उसने वहाँ नाना प्रकार के कार्य किये थे। इंग्लैंड आने पर वह सब से पहिले कैनिंग्टन गया, जहाँ जनता की ओर से कितने ही धनी और निर्धन परिवारों ने उसका स्वागत किया। उसने अपने बचपन में खेली हुई वे सब गलियाँ देखीं, जो उसे अब भी उसी प्रकार जान पड़ती थी।

निर्द्वन्द और निःशंक बाल्यावस्था का शीघ्र ही अन्त होगया। विद्या—हाँ, उसकी आवश्यकता थी, परन्तु उससे भी अधिक कई आवश्यकतायें थीं, और वे थीं, एक दरिद्र परिवार के रहने के लिये घर, खाने को अन्न और वस्त्र—इत्यादि। अतः स्कूल का समय शीघ्र ही समाप्त हो गया—और उसे गृह खर्च के लिये कुछ पैसे लाने के लिये बाध्य होना पड़ा।

प्रायः उसके सभी सम्बन्धी निर्धन थे, अतः उसे कोई व्यापारिक शिक्षा न मिल सकी। वह थियेटर के द्वार पर खड़े रहकर आये हुए दर्शकों की गाड़ी से द्वार खोलकर, तथा इधर-उधर समाचार पहुँचाकर कुछ पैसे प्राप्त कर लेता था। हाँ, कुछ समय के लिये अवश्य ही उसे एक नाई की दूकान में अस्थायी नौकरी मिल गयी थी। उसकी आय कितनी ही कम तथा स्थिति कैसी ही लज्जास्पद क्यों न थी, परन्तु वह सदा प्रसन्न रहता था। उसके एक मित्र मिस्टर डिच, जिनकी आइलिंग्टन में जूतों की दूकान है, उसके विषय में कहते हैं—"मुझे उसकी वह अवस्था याद है, जब

वह चौदह साल का था। वह मेरी दूकान में घण्टों बैठा रहता था और जब मैं जूते बनाया करता, उस समय वह नाचता तथा तरह-तरह के गीत गाता और अनेकों कौतुक करता रहता था। जिस समय अभिनेता और अभिनेत्रियाँ दूकान में जूते लेने आतीं, उस समय वही उनके पास रहता और अनेकों प्रकार की बातों से उन्हें हँसाया करता था। मुझे याद है कि थियेटर में एक बार कुछ गड़बड़ होगई थी। चार्ली किसी प्रकार स्टेज पर पहुँच गया। उसने अपने नाना प्रकार के कार्यों से जनता को हँसा-हँसाकर लोट-पोट कर दिया, और इतनी देर में खेल पुन अपने नियमित रूप से चालू होगया।" यह उसका पहली बार स्टेज पर जाना था, और कोई नहीं जानता कि वह वहाँ कैसे पहुँच गया। इसके बाद तो वहाँ उसकी सदैव माँग होने लगी।

निस्सन्देह उस बालक का जीवन निरुद्देश्य था, परन्तु यह निश्चय है कि उसका भाग्य उसे उचित राह दिखा रहा था। उसके शरीर में एक विख्यात अभिनेता का रक्त था, इसीलिये उसने हास्य-रस में इतनी शीघ्र ख्याति प्राप्त कर ली। अपढ़ होने पर भी उसकी बुद्धि और स्मरण-शक्ति तीव्र थी। उसने दरिद्रता का कष्ट सहन किया था, और दुर्भाग्य के जाल में फँस चुका था।

उसका सौभाग्य उसकी ओर मुस्कराकर देख रहा था। वह अपने हाथ में जीवन का पुरस्कार, ख्याति और धन

लिये हुए खड़ा था, जो अध्यवसायी तथा दुर्भाग्य के साथ घोर युद्ध कर, विजय प्राप्त करनेवाले वीरों को मिलते हैं।

उसने कितनी जल्दी उन पुरस्कारों को प्राप्त किया, यह आगे चलकर पता लगेगा, परन्तु यह निश्चय है कि अभी उनका अन्त नहीं आया था।

॥

तीसरा परिच्छेद

—※—

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों उसके मित्रों को निश्चय होता गया कि चार्ली के शरीर में अपने पिता का पूरा अंश है, और उसका भविष्य भी मंच पर बीतेगा। यह बात केवल उसकी पसन्द पर ही नहीं थी, वरन् उसके प्रारम्भिक कार्य भी ऐसा बताते थे। उसका समय थियेटर में बीतता था, उसके सभी मित्र ऐक्टर थे, और क्योंकि उसकी रुचि दिन दिन उधर ही होती जाती थी, इसीलिये ऐसा प्रतीत होता था कि वह यही व्यवसाय करेगा।

प्रारम्भ में उसने 'लंकाशायर के आठ लड़के'-नामक नृत्य मण्डली में कार्य किया, और अपनी योग्यता-द्वारा मैनेजर का विशेष कृपा-पात्र बन गया। आगे चलकर उसे एक पार्ट मिला, जिसमें वह अपने मजाकिया काम जनता को भली भाँति दिखा सकता था, और वहाँ की जनता उसे बहुत पसन्द करती थी। इसमें उसने बड़ी चतुराई से काम किया। उसकी प्रत्येक भाव भंगी पर हँसी और तालियों की बौछार होने लगती थी।

चार्ली चैप्लिन

चार्ली चैप्लिन अपने 'दि किड'-नामक चित्रपट में ।

उसने इस कार्य को सीखने के लिये बड़ा परिश्रम किया। दूसरे शिल्पकारों के समान उसके मस्तिष्क में भी अनेकों भावनायें आती रहती थीं। सड़क उसका अभिनय सीखने का स्थान था। कोई चाल ढाल या भाव-भंगी यदि उसे पसन्द आती, तो वह तुरन्त उसकी नक़ल करने का यत्न करता था।

कैनिंग्टन रोड पर एक बुड्ढा कोचवान रहता था, जो अपने पाँवों की खराबी के कारण अजीब क़िस्म के जूते पहनकर टेढ़े-टेढ़े पैरों से चला करता था। चार्ली के लिये यह बड़े आनन्द का विषय था। वह सदा उसे बड़े ध्यान से देखा करता, और स्वयं भी वैसा करने का यत्न करता था। उसकी माँ ने उसे लँगड़ाकर चलने से बहुत मना किया, परन्तु चार्ली को इस तरह चलने में कुछ ऐसा मज़ा आता था, कि उसने उधर कुछ भी ध्यान न दिया, और बराबर अभ्यास करता रहा। अन्त में वह इस दर्जे को पहुँच गया, जिसे देखकर जनता स्वयं हँसने लगती है।

नगर के मामूली क्लबों के बाद उसने हास्य-रस के गम्भीर विषय, गीतों तथा नाचों का भी अभ्यास किया।

अपनी पन्द्रह साल की अवस्था में ही उसने आश्चर्य-जनक कार्य करने शुरू कर दिये। उसके परिश्रम और हास्य रस ने उसे शीघ्र ही नाटक के एक्टरों और जनता का प्रिय-पात्र बना दिया। वह ड्रेसिङ्ग-रूम में उन्हें सर हर्बर्ट

बीरभोम ट्री तथा अन्य अनेक प्रसिद्ध अँग्रेज एक्टरों के कार्य की नकल करके उन्हें हँसाया करता था। उसके इन कार्यों ने दूर-दूर तक उसकी प्रसिद्धि कर दी, अत जब कहीं भी कोई खेल होता था, तभी उसकी माँग आती थी।

एक दो वर्ष बीतते-न-बीतते उसने अपना अभ्यास यहाँ तक बढ़ा लिया कि एक दिन वह आगया, जब उसे अपने आशा से कहीं अधिक फल मिलने की सम्भावना होने लगी इसका मूल कारण उसका ऊँचे दर्जे का मूक अभिनय ही था

बीस बाईस वर्ष की अवस्था म उसे सौभाग्यवश एक ऐसे नाटक में काम करने का अवसर मिला, जो चैनेल आइलैण्ड्स में भ्रमण करने जाता था। कम्पनी वालों को पूर्ण आशा थी कि वे उस देशवासियों को अपने कार्यों-द्वारा खूब प्रसन्न कर सकेंगे। परन्तु जर्सी में अपने दो-तीन प्रसिद्ध खेल दिखाने पर उनकी समस्त आशाओं पर एकदम पानी फिर गया, क्योंकि जनता को उनके खेलों में कुछ भी आनन्द न आता था। चार्ली, जिसने सब जगह अपने कार्यों-द्वारा प्रशंसा प्राप्त की थी, अपने कार्यों की ओर जनता की इस अवहेलना से बहुत खिन्न हुआ।

वह और उसके साथी शीघ्र ही इसका कारण समझ गये। आइलैंड की अधिकांश जनता अँग्रेजी नहीं जानती थी। ऐसी दशा में भला वे लोग एक्टरों की शुद्ध अँग्रेजी और ऊँचे दर्जे के गीतों को किस प्रकार समझ सकते थे?

समस्या कठिन थी, परन्तु चार्ली और उसके साथियों ने उसे हल कर ही लिया। उन्होंने सोचा कि यदि जनता हमारी भाषा नहीं समझ सकती, तो क्यों न भाव-भंगी-द्वारा अपने विचार उन पर व्यक्त किये जायें? सफलता अनिश्चित थी, परन्तु उन्होंने ऐसा करने का निश्चय कर लिया।

इसका परिणाम उनके अनुमान से कहीं अच्छा निकला। चार्ली ने मूक अभ्यास शुरू कर दिया, और अन्त में उसे सफलता मिल ही गई। उसका यह मूक अभिनय बोलने की अपेक्षा जनता को अधिक प्रभावित करता था। अत उसने अँग्रेजी भाषा-भाषी जनता के सामने भी मूक एक्टिंग प्रारम्भ कर दिया। और इस कार्य ने चित्र पटों में उसकी बड़ी सहायता की। कुछ वर्षों के बाद जब उसकी ख्याति लाखों करोड़ों आदमियों में फैल रही थी, उस समय उसने एक स्थान पर कहा था कि मुझे अब भी निश्चय है कि किसी विचार को वाणी-द्वारा प्रकट करने की अपेक्षा मूक भाव-भंगी द्वारा प्रकट करने में अधिक सरलता होती है। यद्यपि मूक भाषा के विषय में कुछ स्पष्ट कहना असम्भव है, परन्तु इतना फिर भी कहा जा सकता है कि यह संसार की सब से पुरानी कला है। सृष्टि उत्पत्ति के समय किसी जबान के पैदा होने से पहले लोग एक-दूसरे के भाव संकेत-द्वारा ही समझा करते थे।

चार्ली के एक मित्र मिस्टर चेस्टर कर्टिनी, जिन्होंने आगे चलकर हॉलीवुड में उसके साथ काम किया था, अपने क्लब की कार्रवाई 'साप्ताहिक फ़िल्म' में देते हुए लिखते हैं, कि वह मुझसे पहले-पहल सन् १९१० ई० में मिला था। मिस्टर कर्टिनी उन दिनों 'पाक्स इटन ब्वाएज़' में काम करते थे और चार्ली 'मर्मिंग बर्ड्स' के साथ भ्रमण करता था। कुछ समय के बाद दोनों युवक-एक्टर एक ही कम्पनी मे भर्ती होगये, और उनमें बड़ी मित्रता हो गई।

चार्ली के कार्यो की तारीखों का ठीक पता न होने पर भी उनकी श्रेष्टता मे सन्देह नहीं किया जा सकता।

सन् १९१० मे ग्रेट ब्रिटेन के थियेटरों मे भ्रमण करके चार्ली यूनाइटेड स्टेट्स के थियेटरों में चला गया, और वहाँ वह ऊँचे दर्जे के हास्य रस का कार्य करता रहा। उसने पहले ही अपने कार्य में कुछ उन्नति कर ली थी, और उसकी कुछ कुछ ख्याति भी होने लगी थी। इस समय उसे कार्नो थियेटर में अच्छा वेतन मिलता था, अत उसे अपने खर्च मे भी कोई कष्ट न उठाना पड़ता था।

चार्ली अपनी 'वण्डरफ़ुल विज़िट'-नामक पुस्तक में लिखता है कि हम अपने बचपन में 'ग्लिशोर मैन्सन' में रहते थे, और वहीं से मैं यूनाइटेड स्टेट्स गया था। पुन वह ९१ पृष्ठ पर लिखता है कि ग्लिशोर मैन्सन में ही हमारा भाग्योदय शुरू हुआ। मैंने प्रारम्भ में तुर्की के ग़लीचे ख़रीद-

कर अपने कमरे में बिछाये, और बाद में कई सजावट की चीजें खरीदीं। मिस्टर कर्टिनी ने उसे १९१० की अपेक्षा अवश्य ही कुछ पहले देखा होगा, और चार्ली जरूर ही उनके कहे-मुताबिक दरिद्र होगा।

लण्डन से यूनाइटेड स्टेट्स चले जाने के बाद चार्ली फिर छः साल तक अपने मित्र से न मिल सका।

मिस्टर कर्टिनी अपनी मुलाकात के बारे में पहले ही लिख चुके हैं। बाद में वह उसके अभिनय के विषय में लिखते हुए बतलाते हैं कि उसने इन छः सालों में असीम उन्नति करली थी। वह असहाय और अपरिचित लड़का अब संसार प्रसिद्ध होगया था, और उसकी आमदनी इतनी हो गई थी, जिसे देखकर राजे-महाराजे भी जलते थे।

मिस्टर कर्टिनी का भाग्य उनके अनुकूल न था। उन्हें कार्य मिलना इतना कठिन होगया कि वे सड़कों पर फिरकर गाने के लिये बाध्य होगये। परन्तु भाग्य ने यहाँ भी उनकी सहायता न की, और अन्त में उन्हें ऑडन्रे में अखबार बेचने के लिये मजबूर होना पड़ा। उन्होंने अपने गुजारे के बाद भी इतना रुपया बचा लिया, जिसे देकर उन्हें 'लॉस-एंजिल्स ऐथोलेटिक क्लब' में ६०) रु० मासिक की नोकरी मिल गई। चार्ली चैप्लिन वहाँ का मेम्बर था, और उसने वहाँ एक कमरा ले रक्खा था। इस कमरे के द्वार पर हमेशा दो चौकीदार रहते थे, जो अनजान आदमी को कभी

अन्दर नहीं आने देते थे । यही कारण था कि कर्टिनी अब तक यह न जान सका कि चार्ली कहाँ रहता है। एक दिन अचानक उसे चार्ली को एक चिट्ठी देने उसके कमरे में जाना पड़ा। उसने देखा कि उसका पुराना मित्र अपने पलँग पर बैठा हुआ एक नारंगी चूस रहा है।

कर्टिनी 'चार्ली, चार्ली!' कहकर चिल्ला पड़ा, और दौड़कर उसके पास चला गया। चार्ली ने भी दौड़कर अपने मित्र का हाथ पकड़ लिया। और फिर तो ये मुद्दत के बिछुड़े हुए दोनों मित्र दो घण्टे तक बैठे बैठे अपने बचपन की बातें करते रहे। मिस्टर कर्टिनी कहते हैं कि उसने मुझसे लण्डन और खासकर कैनिंग्टन के विषय में लगातार सैकड़ों सवाल पूछ डाले।

चार्ली उस समय सिर्फ पैजामा (सोने के कपड़े) पहने हुए था, इसलिये वह किसी को अन्दर न बुला सकता था। और उसका मित्र नारंगी खाते-खाते उसके सवालों का जवाब देता जाता था। बराबर के कमरे में चार्ली का सेक्रेटरी क्षण क्षण मे आनेवाले मनुष्यों को कुछ-न-कुछ बहाना करके वापस कर देता था। और टेलीफोन की घण्टी तो शायद ही किसी मिनिट बन्द रहती हो।

क्लब के नौकर अपने साथी के इस अजीब व्यवहार से बड़े नाराज हुए। ऊँचे दर्जे के क्लबों के नौकर कभी ऐसा नहीं करते हैं। जमादार के क्रोध का तो कोई ठिकाना

ही न रहा। वह तीन बार चैप्लिन के कमरे की ओर गया, परन्तु चौकीदारों ने उसे अन्दर न जाने दिया।

उस समय चार्ली के कमरे में तरह-तरह की बातें हो रही थीं, और यदि उन्हें कोई तत्वदर्शी सुनता, तो उसे धन और ऐश्वर्य की तुच्छता का साफ़ पता चल जाता। जिस समय उसका मित्र अपनी दरिद्रता की बातें कर रहा था, तो चार्ली उन्हें बड़े ध्यान से सुनता था, और कभी कभी 'शुभ दिन ! शुभ दिन !' कहकर चिल्लाने लगता था।

उनके इस मिलन ने कर्टिनी की काया पलट करदी। चार्ली ने उसके कपड़े उतरवाकर उसे अपने कपड़े पहनाए। यह काम ख़तम हो जाने पर वे दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए मकान से निकले। मिस्टर कर्टिनी निश्चय के साथ कहते हैं कि जब वे दोनों गैलरी से जा रहे थे, तो क्लब के चौदहों नौकर, ऑफिस के क्लर्क और नौकरों का जमादार उन्हें बड़ आश्चर्य से देखने लगे। जब वे दोनों दरवाज़े के पास पहुँचे, तो कैप्टिन ने क्रोध से चिल्लाकर कहा—"तुम बरख़ास्त किये गए।" और चार्ली ने क्षण भर में घूमकर मुस्कराते हुए उससे कहा—"तुम रख लिए गये।"

मिस्टर कर्टिनी का आगे का हाल लिखना व्यर्थ है, पर इतना लिखना उचित होगा कि वह चार्ली के इस व्यवहार के सर्वथा योग्य थे। चार्ली के लड़कपन का एक काम तारीफ़ के लायक़ है, और वह है उसका पहला प्यार।

चार्ली की ख्याति के समय तो कितनी ही सुन्दरी लड़कियाँ उसे प्रेम करने लगी थीं, परन्तु उसके एक पुराने मूक साथी की बहन ने ही, जिसका नाम हेटी था, चार्ली को पहली दफा प्यार किया था। चार्ली उसे भुला न सका।

महायुद्ध की समाप्ति पर जब चार्ली इँग्लैण्ड गया, और अपनी प्रेमिका हेटी के विषय में पूछ-ताछ की, तो मालूम हुआ कि उसने विवाह कर लिया था, और अब उसकी मृत्यु होगई है। इस समाचार से उसे इतना दु:ख हुआ कि वह सब से पहले कैनिंग्टन के उस बाग मे पहुँचा, जहाँ उन्नीस वर्ष की किशोरावस्था में, पहले-पहल उसने हेटी से प्रेमालाप किया था। अपनी एक पुस्तक मे वह लिखता है—"कैनिग्टन-पार्क की स्मृतियाँ बडी खेदपूर्ण, मधुर और रोमाञ्चकारिणी हैं। यहीं हेटी से पहला मिलन हुआ था। यहीं मैं अपना चुस्त कोट और पुराना हैट पहने हुए आ डटा था। चार बजे तक प्रतीक्षा करने के बाद मुझे हेटी का चन्द्र-मुख दिखाई दिया था।"

युवावस्था का वह स्वर्ण-युग !

चौथा परिच्छेद

—❀—

सन् १९१० ई०में चार्ली चैप्लिन ने 'फ्रड कार्नो कॉमेडी-कम्पनी' के साथ पक्की लिखा-पढ़ी करली, और बहुत दिनों तक यूनाइटेड स्टेट्स तथा कैनडा में हास्य-रस मे ऊँचे दरजे का काम करता रहा। उसका यह कार्य उसके भविष्य में बहुत लाभकर सिद्ध हुआ।

उस कम्पनी का मैनेजर एल्फ रीव्ज उसका बड़ा मित्र था। वह एक ब॰॰ अच्छा प्रबन्धक और ऊँचे दर्जे का व्यापारी था। उसने कई साल तक सर्कस के मालिक लॉर्ड जॉर्ज सैंगर की नौकरी करने के बाद 'फ्रेड कार्नो' की एजेंसी लेली थी। वह उनका एतबारी आदमी था। इसके सिवा उसे जनता की रुचि का बड़ा अनुभव था। रीव्ज को चार्ली का बहुत ध्यान रहता था, और वह उसकी तकलीफ़ के समय उसे नेक सलाह और सहायता देता रहता था। चार्ली को यद्यपि उस समय कुछ अनुभव न हुआ, पर यहाँ उसे आगे चलकर चित्रपट में काम करने के लिये बड़ा अनुभव मिला।

फ्रेड कार्नो कम्पनी ने कुछ मूक खेल तैयार किए थे, और उनमें सब से अच्छा एक खेल पहली दफ़ा 'लएडन म्यूज़िक हॉल' मे दिखाया गया। चार्ली उसमें एक शराबी विद्रोही का काम करता था। उसका पार्ट कहीं कहीं इतना जोशीला था कि वह स्टेज से नीचे गिरने लगता था।

कम्पनी सन् १९१२ की वसंत ऋतु तक अमरीका और कैनेडा में भ्रमण करती रही। इसके बाद वह नये खेल तैयार करने इँग्लैंड चली गई, और उसी साल की ग्रीष्म ऋतु में फिर अमरीका वापस आगयी।

चार्ली का एक्टिङ्ग अमरीका की जनता को बहुत पसद आया। वैसे तो सभी उसकी तारीफ करते थे, परन्तु उसके अपने साथी यहाँ तक कहते सुने जाते थे कि कम्पनी में उससे अच्छा दूसरा एक्टर ही नहीं है।

परन्तु वह एक दु ख दायक जीवन था। हर रोज़ का अभ्यास, नई-नई जनता के सामने रात को खेल, हमेशा लम्बे-लम्बे सफ़र—इत्यादि सब का कष्ट-दायक जान पड़ते थे। चैप्लिन तथा दूसरों को इस दिन चर्या से घृणा थी। वह आगे चलकर लिखता है कि जब हम अमरीका में खेल किया करते थे, उस समय हमारा दिल लएडन जाने को करता था, और जब हम लएडन होते थे, तो कहीं और जाने को तबियत करती थी। परन्तु कष्टमय होने पर भी

हममें से कोई भी उसे न छोड़ सकता था, क्योंकि इसी की बदौलत हमें भोजन, वस्त्र और धन मिलता था।

सन् १८८९ ई० में जबकि चैप्लिन पैदा हुआ था, टी० ए० एडीसन ने चित्रपटों का कैमरा (Kinetoscope) ईजाद किया था। इस समय तक उसमें काफ़ी परिवर्तन होगया था। चित्रपट बनने भी शुरू होगये थे। पहले पहल उससे सिर्फ़ सुन्दर-सुन्दर दृश्य ही दिखाये जाते थे, लेकिन बाद में बड़े बड़े खेल भी दिखाये जाने लगे। अमीरों ने उससे फ़ायदे की आशा देखकर इस रोजगार में बड़ी बड़ी रक़में लगा दीं। परन्तु यह अभी प्रारम्भिक उन्नति ही थी। बनानेवाले एक रील की तस्वीर से ज़्यादे बनाने का यत्न न करते थे। नाटक-कम्पनियाँ उनका बड़े ज़ोरों से मुक़ाबला कर रही थीं।

वह जानता था कि नाटकों की अपेक्षा चित्रपटों में अधिक आर्थिक लाभ की आशा है। उधर सिनेमा-व्यवसाय की रक्षा के लिये कितने ही क़ानून और तरीक़े निकल गये। कुछ दिन तक तो इसका घोर प्रतिवाद किया गया, परन्तु जुलाई, १९१३ के अन्त में उसकी समाप्ति होगई। इस भयानक शांति ने 'न्यूयॉर्क मोशन पिक्चर कम्पनी' के प्रेसीडेण्ट मिस्टर कैमल की सारी चिन्ताएँ एकदम दूर करदीं। वह बड़ा मेहनती आदमी था, और बेकार बैठना उसके लिए कठिन था। एक दिन वह अपने कमरे में बैठा था,

अचानक उसे घूमने की इच्छा हुई, और वह तुरन्त बाहर चल दिया। टैमर्स्टन म्यूज़िक हॉल में पहुँचने पर उसकी भेंट अपने मैनेजर 'मिक् सुलीवान' से हुई। जब वे दोनों बातें कर रहे थे, कि अचानक अन्दर से ज़ोर-ज़ोर से हँसने की आवाज़ आने लगी।

"यह चैप्लिन की आवाज़ जान पड़ती है।" कैसल ने कहा।

"वह बड़ा अच्छा एक्टर है, परन्तु बाकी तो सब मामूली नौसिखिये ही हैं।" मैनेजर ने उत्तर दिया।

"देखूँ तो सही, वहाँ हो क्या रहा है!" इतना कहकर वह अन्दर चल दिया।

भीतर फार्नो-कम्पनी का खेल हो रहा था। जिस समय खेल खतम होगया, तो कैसल सीन के पीछे जाकर चैप्लिन से मिला।

वह उस समय जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उतार रहा था।

अन्य अमेरिकनों की तरह कैसल भी स्पष्टवक्ता था, इसलिये उसने आते ही अपने आने का कारण बता दिया। उसने अपना परिचय देने के बाद कहा कि उसे अपनी कम्पनी के लिये एक हास्य रस (कॉमिक) के एक्टर की आवश्यकता है, जो उसके साथ हॉलीवुड जाकर तस्वीरें तैयार करे। फिर उसने कहा कि मैंने तुम्हारा काम देखा है, इस लिये मेरा खयाल है, कि तुम उसके सर्वथा योग्य हो। तब उसने २५०) रु हफ्ता तक वेतन देने की बात कही।

चैप्लिन इतनी आसानी से फँसनेवाला न था। एक बार तो उसकी आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं,—क्योंकि आज पहली दफा उसे इतना वेतन मिल रहा था—परन्तु उसने धीरज को हाथ से न जाने दिया, और कैसल की बात स्वीकार न की। चार्ली 'कोकनी'-प्रान्त की भाषा बोलता था, जो कैसल कम समझता था, परन्तु फिर भी उसे चार्ली की तर्कपूर्ण आपत्ति सुनकर आश्चर्य हुआ। चार्ली ने कहा कि इस समय मुझे काफी वेतन मिल रहा है। मेरी कम्पनी शीघ्र ही बाहर जानेवाली है इसलिये मुझे नौकरी छूटने का भी कोई भय नहीं है। दूसरे, मैंने पहले बहुत तकलीफें उठाई हैं, इसलिये मैं भविष्य की आशा से अपने लगे हुए काम को नहीं छोड सकता।

परन्तु कैसल भी इतनी जल्दी हारनेवाला न था, क्योंकि जब कोई बात उसके दिल मे बैठ जाती थी, तो वह उसे पूरा किये बिना कभी न छोड़ता था।

"मैं कहता हूँ,मिस्टर चैप्लिन!" उसने उत्तर दिया-"हम तुम्हें २५०) रु० हफ्ता देंगे। क्या यह कुछ कम वेतन है?"

पर चार्ली ने सिर हिलाकर अस्वीकार कर दिया।

फिर बहस शुरू हो गई। कैसल हठ करता था, और चैप्लिन इनकार करता जाता था।

फिर कैसल ने जोश के साथ कहा—"मैं तुम्हें ३५०) रुपया हफ्ता दूँगा।"

इतना समझाने और लालच देने पर भी चार्ली विच लित न हुआ। इस बार भी कैसल का उपाय बेकार गया, और वह अपनी असफलता पर झुँझलाता हुआ अपने ऑफिस चला गया। उधर चार्ली भी अपनी मूर्खता पर शोक करने लगा। परन्तु एक-दो महीने बाद, जब कार्नो कम्पनी निक्सन थियेटर में खेलकर रही थी, उस समय वहाँ के मैनेजर अल्फ्रेड रीव्ज को एक तार मिला। उसमें लिखा था—

'यदि तुम्हारी कम्पनी में चार्ली काम कम करता हो, तो शनिवार को हमारे दफ्तर में भेज दो।

भवदीय—

कैसल।"

चार्ली स्वयं भी एक जगह कहता है, कि उसे भी एक वैसा ही तार मिला, जो कैसल ने भेजा था। परन्तु उसका पता देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। और वह था, मिस्टर क्रिज, कार्नो थियेटर। इसमें भी वही लिखा था, जो उसके अपने तार में। जब क्रिच को यह पता लगा, तो उसने उसे माँगा, परन्तु चार्ली ने उसे यह कहकर टाल दिया कि यह मेरा वैसा ही मजाक था, जैसा कि मैं कभी-कभी औरों के साथ भी करता हूँ।

आगे जो कुछ हुआ, वह और भी आश्चर्यजनक है। रीव्ज ने चैप्लिन को उसका तार दिखाया, और उसे न्यूयॉर्क जाने के लिये बहुत समझाया। चार्ली ने उसकी बात

स्वीकार करली, और वह वहाँ गया। वहाँ हजरत कैसल मौजूद थे। उनकी मतलब-भरी मुस्कान देखते ही उसकी समझ में सब-कुछ आगया। परन्तु मामला अब भी आसानी से सुलझ जानेवाला न था। चार्ली अपनी मुसीबत में काम आनेवाली कम्पनी को छोड़ने को उद्यत न होता था। अन्त में कैसल ने १५० डॉलर प्रति सप्ताह देने का वचन दिया, और उसके सामने सरखत रख दिया। यह वह वेतन था, जिसकी चार्ली ने कभी आशा भी न की थी। उसे वह सम्पत्ति, जिसकी वह बहुत दिनों से इच्छा कर रहा था, शीघ्र ही मिलने की आशा होने लगी। परन्तु उसने उस समय उस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। कैसल ने बहुतेरा हठ किया, चित्रपटों मे काम करने से आगे चलकर होनेवाली आय का भी स्मरण दिलाया, परन्तु उस समय उसने हस्ताक्षर करना किसी प्रकार भी स्वीकार न किया। उसने रीव्ज से सलाह लेने को समय माँगा।

चार्ली अल फ्रेड रीव्ज से सलाह लेने के लिये फिलाडल्फिया चला गया। उससे सब बातें सुनने पर अल फ्रेड रीव्ज ने कहा—"तुम यह अवश्य स्वीकार करलो, क्योंकि सारी उमर काम करने पर भी तुम्हें यहाँ इतना वेतन न मिल सकेगा।"

बात समाप्त होगई, उसने सरखत लिख दिया, परन्तु अपना पहली नौकरी का समय पूरा होने तक वहीं रहने का वादा करा लिया।

इसके बाद १९१३ ई० में, जिसे चार्ली अपना शुभ वर्ष कहता है, वह चित्रपट का एक प्रसिद्ध एक्टर बन गया।

मुद्दतों इधर-उधर मारे-मारे फिरने के बाद चार्ली को कैलिफ़ोर्निया में स्थायी रूप से रहने म बड़ा आनन्द और शान्ति प्राप्त हुई।

फ़िल्म-व्यापार अभी अधिक नहीं बढ़ा था, परन्तु वह समय निकट आगया था, जब कि यह व्यापार भी संसार के बड़े से बड़े व्यापार की बराबरी का दावा कर सकता था।

चार्ली पहले पहल इस नये काम को देखकर कुछ घबरा गया। परन्तु जिस समय उसने अपना पहला चित्रपट बनाना शुरू किया, तो उसे मालूम हुआ कि जनता की अपेक्षा कैमरे के सामने एक्ट करना कहीं आसान है। उसका कई साल का पुराना अभ्यास और अनुभव इस समय बड़ा अमूल्य साबित हुआ। उसका पहला चित्रपट "Tillie's Punctured Romance" था, इस खेल म मेरी ड्रेसलर उसके साथ कार्य करती थी। उसने शुरू-शुरू में चार्ली की बड़ी सहायता की। वह अपनी किताब "The Life Story of an Ugly Duckling" में लिखती है कि मैंने ही पहली बार चैप्लिन की प्रकृति हास्य-रस की ओर फिराई थी। परन्तु इस प्रकार का हक कई आदमी जमाते हैं, जिनमें मिस्टर कैसल मुख्य है।

चार्ली चैप्लिन और -सकी द्वितीय पत्नी लिटा मे।

पाँचवाँ परिच्छेद

— ❀ —

चार्ली चैप्लिन की इतनी शीघ्र उन्नति के कई कारण हो सकते हैं। और भी कितने ही मनुष्य स्वभावत ऐसा कर सकते थे, यदि उनके समय में कैमरे का आविष्कार हो-गया होता। परन्तु सिनेमा इसी शताब्दी की ईजाद है, इसलिये जो लोग इससे पहल पैदा हुए, वे इस अश्चर्यजनक मशीन से कोई लाभ न उठा सके।

लेखक अपने लेख और कविताओं के द्वारा दुनिया में नाम पा सकता है, परन्तु उसी की पुस्तकें पढ़नेवाले लाखों मनुष्य उसे पहचानते तक नहीं हैं। कारण यह है कि वह असंख्य जनता के सामने स्वयं अपनी शक्ति का परिचय नहीं करा सकता। अ र आप रेडियो को लीजिए। मनुष्य उसके सामने खड़ा होकर मामूली सी बात भी असंख्य जनता के सामने स्वयं कहकर उनकी प्रशसा प्राप्त कर सकता है। कैमरा किसी मनुष्य के कार्य केवल जनता के सामने ही नहीं, वरन् उस मनुष्य को स्वयं उसकी भाव-भंगी और उसके करतब वैसे के-वैसे ही दिखा देता है। और यदि

यह मनुष्य तनिक भी चतुर हो, तो बहुत जल्दी अपनी भूलों को ठीक कर सकता है। लॉर्ड बाइरन एक रात में ही जगत्-प्रसिद्ध होगये। परन्तु उनकी सूरत से लन्दन के थोड़े आदमियों के सिवा और कोई परिचित न था। और उनकी कविता भी केवल अँग्रेज़ी-भाषा-भाषी जनता तक ही सीमित थी।

चार्ली चैप्लिन कुछ ही महीनों में लाखों और करोड़ों मनुष्यों में प्रसिद्ध होगया, और उनकी असीम कृपा का अधिकारी हुआ। जनता उसके कार्यों की प्रशंसा करती थी, और उसके दुर्भाग्य के दिनों के लिये दुःख और उसके कठिन प्रयत्न की प्रशंसा करती थी।

यों जनता चार्ली चैप्लिन की प्रशंसा नाटक के स्टेज पर पर करती, परन्तु यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि और ऐश्वर्य तो उसे केवल सिनेमा के कारण ही मिली है।

प्रश्न होता है कि चार्ली चैप्लिन ने किस प्रकार इतनी ख्याति प्राप्त की? इसका उत्तर कितने ही समालोचकों ने दिया है।

यह निश्चय है, कि चार्ली का प्रारम्भिक कार्य बहुत मामूली था। उसके अनेकों कार्यों का प्रारम्भ जर्मन-युद्ध के समय में हुआ था। जनता चित्रपट में उस घोर युद्ध और रक्तपात के प्रत्येक दृश्य देखकर अपनी निर्बलता, दुःख और सब चिन्ताएँ भूल जाती थी, और उसके हृदय में

उत्साह तथा नवजीवन का सञ्चार होने लगता था। लड़ाई से छुट्टी लेकर घर आये हुए सिपाही चार्ली के हँसानेवाले कार्यों को देखकर प्रसन्न होते थे। घायल सैनिकों को ये चित्र दिखाने का विशेष प्रबन्ध किया गया था, और मिस्टर कैसल तथा उसके साथियों को चार्ली के आश्चर्यजनक मजाकिया कामों के लिये प्रशंसा के हजारों पत्र रोज मिलते थे। निश्चय ही युद्ध के दिनों में दिखाये जानेवाले चित्रपटों-द्वारा चैप्लिन ने बड़ी ख्याति प्राप्त की। परन्तु यदि उन दिनों युद्ध न भी होता, तो भी उसके चित्रपटों की उतनी ही प्रशंसा होती। यह सम्भव था कि उसकी ख्याति होने में कुछ देर लगती।

इस कथन की सत्यता म कोई सन्देह नहीं है, कि चैप्लिन ने अपने काम से चित्रपटों की जड़ता को दूर कर, उसके स्थान में परिहास भर दिया। इससे भी अधिक उसने अपने कार्य द्वारा संसार के सामने वह ऊँचा आदर्श पेश किया, जो चार्ल्स डिकेन्स ने अपने एक पात्र 'सैम वेलर' में दिखाया था। डिकेन्स की कला ने सैम वेलर को सदा के लिये अमर कर दिया। उसकी बड़ाई प्रलय-काल तक होती रहेगी, और लाखों आदमी सदा उसका सम्मान करते रहेंगे।

यह बात किसी देश या जाति के एक व्यक्ति के लिये लागू नहीं है। पुराने जमाने के ग्रीक-योद्धाओं की वीरता की

बड़ाई कविताओं के कारण सदा अमर रहेगी। अठार
शताब्दियों में हुए रॉबिन्सन क्रूसो, जोनेथन विल्ड ।
स्क्वायर वेस्टर्न–इत्यादि की कहावतें अभी तक प्रसिद्ध
और हमारे भारतवर्ष का तो कहना ही क्या है? यहाँ
सदा से ही हर-एक विषय के ऐसे ऐसे धुरन्धर पण्डित
ऋषि-मुनि होते आये हैं, जिनकी बनाई हुई पुस्तकों
सदुपयोग करके आज सारी विदेशी जातियाँ सभ्यता
डींग मारती हैं। और तो क्या, इस गये-बीते ज़माने में
ऐसे ऐसे व्यक्ति यहाँ विद्यमान हैं, जिनका सानी शायद
किसी देश में मिल सके। चार्ल्स डिकेन्स के बाद 'कैप्टि
किटल,' 'शरलक होम्ज़'–आदि पात्रों ने एक-से-एक अच
काम किये हैं, परन्तु जो काम चार्ली चैप्लिन ने कर दिखाया
वह आज तक कोई न कर सका।

चार्ली चैप्लिन की अजीब उन्नति का मुख्य कारण फ़िल्म
(चित्रपट) है। उसके भाग्य के चक्र ने उसे ज़रा-सी देर में
एक आदर्श व्यक्ति बना दिया। बड़ी-बड़ी सभायें और क्लबें
उसे अपने यहाँ बुलाने में गर्व करती हैं। उसके प्रशंसा
करनेवाले तो उसकी तारीफ़ के पुल बाँध देते हैं। सुन्दरी
स्त्रियाँ तरह-तरह के शृङ्गार करके उसे रिझाने का यत्न
करती हैं। वे लोग, जो उसके बुरे दिनों में उससे कभी बा
भी न करते थे, अब उसकी खुशामदें करते, और उसक
दोस्ती करना चाहते हैं।

शुरू-शुरू में अपनी ओर लोगों का यह भाव देखकर तो उसे ऐसा जान पड़ता था कि ये सब एकदम पागल होगये हैं। कुछ दिन तक तो उसे लोगों के इस नये ढग पर बडा आश्चर्य होता रहा, जोकि उसकी दृष्टि से स्पष्ट झलकता था। उसे उन लोगों की बातों में बड़ा मजा आता था।

उसके लिये यह ख्याति एक कसौटी के समान थी। पर वह अपने काम में सच्चा साबित हुआ। लोग ऐसे समय पर प्राय उत्तेजित हो-उठते हैं, और उन्हें अभिमान होजाता है। परन्तु चार्ली पर इन बातों का कुछ असर न हुआ, वह पहले-जैसा ही सीधा-सादा बना रहा। यद्यपि उसे जनता-द्वारा अपनी प्रशंसा की इच्छा होती थी, परन्तु उसे इन बातों से अभिमान न होता था। बड़ी सभाओं मे शामिल होना उसे नापसन्द था—और खासकर वह ऐसे स्थान पर, जहाँ लोग उसकी प्रशंसा करते होते। वह अपने सच्चे मित्रों के साथ बैठकर बातचीत किया करता, या छोटे छोटे बच्चों के साथ घूमता रहता था। इसके सिवा वह सदा अपनी प्रयोगशाला (Studio) में बैठकर अपना काम किया करता था।

चार्ली की सफलता के विषय में हम उसका शुरू का कार्य-क्रम देखने से और भी अच्छी तरह पता लग जाता है। शुरू-शुरू मे अगर उसे किसी खेल में कोई काम करना

पड़ता था, तो पहले दूसरे लोग उसके पार्ट का अभिनय करते थे, और फिर चार्ली स्वयं उन्हें ठीक करके कैमरे के सामने करता था। इस तरह धीरे धीरे ख्याति यहाँ तक बढ़ी कि उस कम्पनी के बाक़ी सब एक्टर केवल उसके काम में सहायक-मात्र ही रह गये। और 'कीस्टोन' कम्पनी की वे पचास हास्यमय कहानियाँ आज तक केवल इसलिये प्रसिद्ध हैं, कि चार्ली ने उनमें कार्य किया है।

एक्टरों की तरह शुरू शुरू में चार्ली को भय होता था कि कहीं जनता उसके कामों की हँसी न उड़ाये। वह सोचा करता था कि क्या जनता उसके काम को पसन्द करती है? क्या उसका सभाक्रिया काम जनता को दिखाने जाने योग्य है?

जनता की रुचि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उसकी प्रारम्भिक उन्नति साधारण ही थी। उसे जब यह ध्यान आया, तो उसने गम्भीरता से सोचना शुरू किया। इससे पहले उसने अपनी उन्नति का ध्यान न कर, केवल जनता की रुचि का ही लक्ष्य रक्खा था। परन्तु अब उसने फिर नये सिरे से सोचना शुरू किया। बहुत सोचने के बाद उसने एक उपाय निकाला, और वह यह था।

उसने मान लिया कि वह एक ऐसा आदमी है, जो जनता का सरपंच है, और चूँकि मुखिया की इच्छा पूरी करना ही जनता को प्रसन्न करना है, इसलिए अगर वह

अपने कामों द्वारा अपने को प्रसन्न कर सकता है, तो कोई कारण नहीं है कि जनता उसके कामों को पसन्द न करे। उसको यह धारणा कैसे हुई, और किस तरह उसने इस पर अमल किया—यह उसने स्वय ही लिखा है।

वह कहता है—"मैंने यह अनुभव करना प्रारम्भ किया कि मैं भी जनता का एक व्यक्ति हूँ, और मेरा शरीर अपने कामों-द्वारा मुझे प्रसन्न करना चाहता है। मैं जब भी कोई काम करता था, तो यह भूल जाता था कि मैं एक्टर हूँ। बल्कि मैं यह निश्चय कर लेता था कि मैं वह आदमी हूँ, जिसे कम्पनी और चार्ली प्रसन्न करना चाहते हैं। जब यह धारणा बहुत ही गहरी होगई, उस समय मेरी आत्मा मेरे सब भले और बुरे कामों को उतनी ही अच्छी तरह मुझे बताती थी, जैसे कि जनता। जो हँसी-मजाक मुझे अच्छे लगते थे, वे जनता को भी उतने ही भले मालूम होते थे।

"जब-जब मैंने इस प्रकार काम किया, तब-तब मुझे पूरी सफलता मिली। कीस्टोन कम्पनी की पचास तस्वीरें, जिनमें मैंने जनता को प्रसन्न करने का यत्न किया, उतनी अच्छी न बन सकीं, जितनी कि वे, जिनमें मैंने स्वय अपने-को प्रसन्न करने की इच्छा से काम किया था।"

उसका भाग्य उसकी आशा से सदा ही कुछ दूर रहता था, और सफलता भी कुछ उसके प्रतिकूल जान पडती थी। यदि कभी वह बलपूर्वक आगे बढने का उद्योग करता

था, तो अपनी अयोग्यता और मूर्खता का ध्यान उस सब इरादों पर पानी फेर देता था। जब कभी वह किस बहादुर आदमी को चित्रपट में अपनी असीम वीरता द्वारा अपने रास्ते में आई हुई सारी तकलीफों को दूर कर अपना अभीष्ट सिद्ध करते देखता, तो उसके दिल फ़ौरन् अपनी कमजोरी का ध्यान आजाता था, और व कुछ-कुछ उत्साह-हीन हो जाता था। परन्तु कुछ क्षण बा ही उसे सफलता की रेखा दिखाई देती थी, और उसव सारा भय दूर हो जाता था।

चैप्लिन की धारणा है कि उसे केवल इसीलिये सफल मिली कि उसने अपने कामों से दूसरों को प्रसन्न कर की अपेक्षा अपने को प्रसन्न करने का यत्न किया। उसके शब्दों में यूँ कह सकते हैं कि उसने दूसरों की सम लोचना के बदले अपनी आत्मा की आवाज सुनी, जो उस की हर-एक कमजोरी को ठीक ठीक बताती थी। उसने अपनी सारी गलतियों को ठीक कर लिया, और आज वह इस दशा का प्राप्त होगया है, कि हम उसे एक आदर्श एक्टर मानने लगे हैं।

चित्रपटों मे चैप्लिन के प्रारम्भिक कामों को देखने से पता लगता है कि उसका काम साधारण हास्य रस से कुछ ऊँचा जरूर है, पर यदि हम उनकी तुलना उसके बाद के किये हुए कामों से करें, तो वे बिलकुल मामूली जान पड़ते

हैं। पहले वह हास्य रस के छोटे-छोटे चुटकले ही जनता को दिखाता था। यह सदैव जनता को हँसाने के लिये तत्पर रहता था, और इसलिये उनके प्रसन्न करनेवाले किसी काम के करने से न हिचकता था।

परन्तु उसकी यह स्थिति बहुत दिन नहीं रही। उसने पहले की अपेक्षा ऊँचे दर्जे के काम करने प्रारम्भ किये। मोरी में से निकलकर भागना, संयोग-वश भले आदमियों पर कीचड़ फेंक देना—आदि साधारण घटनाओं को देखकर हँसने वाले दर्शकों की कमी नहीं थी, परन्तु उसने अनुभव किया, कि इसका नाम वास्तविक हास्य रस नहीं है। उसने अनुभव किया कि हास्य रस वह चीज है, जिसका मानव जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है। वह कहता है कि मुझे यह ज्ञान पड़ने लगा, कि हास्य रस मस्तिष्क की वह मीठी सरसराहट है, जो मनुष्य को गम्भीरता से हटाकर उसे चंचल होने के लिये बाध्य कर देती है, और ऐसी हालत में कुछ देर के लिये मनुष्य अपनी सारी चिन्तायें भूल जाता है

जिन लोगों ने शुरू-शुरू में चैप्लिन के चित्रपट देखे हैं, उन्हें यह अच्छी तरह मालूम होगा कि उसने कितनी जल्दी उन्नति की है।

छठा परिच्छेद

—※—

हॉलीवुड में चैप्लिन की दोस्ती सब से पहिले मैक सेनेट से हुई थी। वह 'न्यूयॉर्क मोशन पिक्चर कम्पनी' का डाइरेक्टर और मैनेजर था। सेनेट ने ही सब से पहले चित्रपट का व्यापार प्रारम्भ किया था। उसने 'एडीसन किनेमा कम्पनी' मे रहकर सब से पहले चित्रपट तैयार किये। कैसल की तरह उसने भी चार्ली का मूक अभिनय देखा था, और उसकी यह हार्दिक इच्छा थी, कि वह उसका सहयोग प्राप्त कर सके।

चैप्लिन और सिनेट का दिल शीघ्र ही मिल गया। सिनेट ने देखा कि चैप्लिन बड़ा उत्साही, विचारवान और अत्यन्त उन्नतिशील युवक है। परन्तु साथ ही उसे यह भी पता लग गया कि और एक्टरों की तरह उसे केवल अपनी नौकरी की ही चिन्ता नहीं है। इस काम से उसे हार्दिक प्रेम था, इसलिये वह कीस्टोन के प्रत्येक चित्रपट को अपने नये-नये आविष्कारों से सजाने का यत्न करता रहता था।

इसके बाद सेनेट को उसमें एक और विशेषता नजर आई—जिससे चार्ली उसे अक्षय सोने की खान के समान मालूम होने लगा। उसने देखा कि कीस्टोन-कम्पनी की सारी तस्वीरें बड़ी ख्याति प्राप्त कर रही हैं, और ग्राहक औरों को छोड़-छोड़कर उसी की तस्वीरें खरीदते हैं, क्योंकि वे सब उसी की असफल नकलें होती थीं।

न्यूयॉर्क-वालों ने सेनेट से कहा कि चैप्लिन ही इसका प्रधान कारण है, इसलिये जैसे भी बने उसे अपने यहाँ से अलग होने का अवसर न देना। सेनेट स्वय भी यही चाहता था और उसे इसका भय भी न था, क्योंकि चार्ली की उससे बड़ी मित्रता थी और उन दोनों का व्यापारिक सम्बन्ध भी घनिष्ट था।

परन्तु समय न मित्रता के भाव की कोई परवाह न की। चार्ली को अपनी ख्याति का पता लगने लगा था। जब चारों तरफ़ उसी की चर्चा होती थी, तो यह बात उससे किस तरह छुपी रह सकती थी? चार्ली एक फ़ैशन बन गया था। हैबडेशायर की दूकानों में चैप्लिन हैट, चैप्लिन-टाई और चैप्लिन मोजे आदि खूब बिकते थे। उसके पास हर रोज उसकी तारीफ की कितनी ही चिट्ठियाँ पहुँचती थीं। प्रेस और अखबारों में रोज उसकी तारीफें निकलती थीं, और बहुत-से लोग उसकी झूठी-सच्ची कहानियाँ बनाकर रुपये कमाते थे। एक बार एक समा-

चार निकला था, जिसमें लेखक ने बड़े जोरदार शब्दों में लिखा था कि चार्ली के अभिनय के समय के जूते हर रोज रात को एक तिजोरी में रक्खे जाते हैं, और उनके पहरे के लिये एक हथियारबन्द आदमी तैनात रहता है।

न्यूयॉर्क के कासल हॉल-नामक थियेटर में एक बार चैप्लिन के अभिनय का चित्रपट दिखाया गया था, और उसे जनता ने इतना पसन्द किया, कि लगातार दस वर्ष तक कोई भी सप्ताह ऐसा नहीं गया, जिसमें उसे न दिखाया गया हो।

चार्ली को अपनी सफलता पर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा कि आखिर उसने अपनी वर्षों की दरिद्रता को दूर कर दिया, और अब वह अपने रिश्तेदारों के सामने सर ऊँचा करके खड़ा हो सकेगा। परन्तु इस सौभाग्य और ख्याति के समय भी उसे औरों की तरह अहंकार नहीं हुआ, और न ही उसने अपने काम में किसी तरह की शिथिलता आने दी।

अत परिस्थिति देखकर उसने अपने मालिक से तनख्वाह बढ़ाने के लिए कहा। वह जानता था कि कीस्टोन-कम्पनी उसके काम की बदौलत बहुत रुपया कमा रही है, और दूसरी कम्पनियों में काम करनेवाले एक्टर, जो उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं जानते, उसके जितनी तनख्वाह ले रहे हैं। यह बात उसे बड़ी बुरी लगी।

कुछ दिनों तो सेनेट ने उसे लम्बे वादों के लालच में रक्खा, और वह भी अपना अनुभव बढ़ाता गया। परन्तु साल के खत्म होने पर चार्ली ने फिर तनख्वाह का प्रश्न उठाया। इस दफ़ा सेनेट ने उसके साथ व्यापारिक ढङ्ग से बातें शुरू कीं। वह जान गया था कि उसकी मुख़ालिफ़ कम्पनियों को पता लग गया है, कि चैप्लिन का एक्टिंग कितना पैसा देनेवाला है, और यह कि इस समय यदि वह चला गया, तो उसे बड़ी हानि उठानी पड़ेगी।

सेनेट ने अब उसका वेतन डेढ़ सौ डॉलर से चार-सौ डॉलर करना चाहा। पर चार्ली ने इस वेतन को अस्वीकार कर दिया। अपने मित्रों की राय के अनुसार उसने साढ़े सात-सौ डॉलर प्रति सप्ताह माँगा। इस पर सेनेट ने सिर हिलाकर कहा—"इतना वेतन तो केवल एक साल नौकरी करने के बाद किसी ने भी नहीं प्राप्त किया है।"

अब सेनेट चैप्लिन को दूसरी कम्पनी के एजेण्टों से मिलने-जुलने का अवसर न देता था। स्टुडिओ की बड़ी सतर्कता से रखवाली की जाती थी, और कोई भी मनुष्य बिना ख़ास ज़रूरत के वहाँ न जाने पाता था। गुप्तचरों-द्वारा चार्ली की देख भाल रक्खी जाती थी।

एक दिन एक नौजवान लड़के ने ऑफ़िस में आकर मिस्टर सेनेट से मिलने की इच्छा प्रकट की। मैनेजर को उससे मिलने पर मालूम हुआ कि वह एक अनुभवी एक्टर

है, जो उनकी कम्पनी में काम करना चाहता है। वह अन्दर बुला लिया गया, और परीक्षा लेने पर पास होगया।

उसकी नौकरी की अर्ज़ी तो केवल एक बहाना था। वह एक प्रसिद्ध एक्टर और ईसानी-कम्पनी का विश्वास-पात्र एजेण्ट था। उसकी नौकरी का असली उद्देश्य केवल चैप्लिन से मिलना ही था। चैप्लिन के साथ उसकी बहुत ही थोड़ी व्यापारिक ढङ्ग की बातें हुईं। दो दिन के बाद उस ने अपनी शिकागो की कम्पनी में तार दिया—"अगर तुम चार्ली चैप्लिन को एक हज़ार डॉलर प्रति सप्ताह दे सको, तो वह तुम्हारे यहाँ काम कर लेगा।" कम्पनी के प्रेसीडेण्ट मिस्टर जी० के० स्पूर उस समय मौजूद थे। उन्होंने तार पढ़कर अपने असिस्टैंट से पूछा—"यह चार्ली चैप्लिन कौन है?" उसने उत्तर दिया—"कीस्टोन-कम्पनी में आश्चर्यजनक काम करनेवाला अमरीका का सब से बड़ा एक्टर।"

"उसे तार देकर कह दो—हमें एक हज़ार डॉलर देना स्वीकार है।" उन्होंने तुरन्त कहा।

एक दिन सेनेट और चैप्लिन वेतन के लिए बहस कर रहे थे। चैप्लिन कहता था कि उसके कार्य को देखते हुए ७५०) डॉलर कुछ नहीं है। इसी समय ईसानी कम्पनी का तार आया। बात समाप्त होगयी। सेनेट ने अपनी अदूरदर्शिता के कारण ऐसे अच्छे एक्टर को अपने हाथ

से खो दिया। आगे चलकर जब सेनेट ने चैप्लिन की और भी अधिक ख्याति सुनी, उस समय उसे अपनी मूर्खता पर बड़ा पछतावा हुआ।

२ जनवरी १९३० ई० को ईसानी-कम्पनी ने अखबारों में छाप दिया—"हास्य-रस का सब से बड़ा एक्टर चार्ली चैप्लिन हमारी कम्पनी में आगया है।" यह समाचार उस प्रकाशित हुआ, जबकि सारा संसार महायुद्ध में लीन था। बड़े बड़े साम्राज्यों का भविष्य योरोप के महायुद्ध पर ही निर्भर था। मनुष्यों को सदा अपने प्राणों की चिन्ता लगी रहती थी।

ईसानी-कम्पना ने अपने कामों-द्वारा लड़ाई में गए हुए मनुष्यों की बड़ी सेवा की। पहले लिखा जा चुका है कि चैप्लिन के हास्य चित्रों को देखकर घायल कुछ क्षण के लिए अपने कष्ट भूल जाते थे। इसी तरह के कितने ही काम करके ईसानी-कम्पनी ने बहुत धन और ख्याति प्राप्त की।

युद्ध से थके और छुट्टियों पर गये हुए सैनिकों को चार्ली के मजाक़िया काम देखकर ऐसा जान पड़ता था कि इन दुःख के दिनों में भी वह उन्हें खुशखबरी सुना रहा है। खाई में छुपे और युद्ध-स्थल में पड़े हुए सैनिकों का फ़ालतू समय उसी की चर्चा में बीतता था। वे उसे एक देव-दूत के समान समझते थे, जो उनके लिये आश्चर्यजनक मज़ाक़िये की शक्ल में उत्पन्न हुआ था। मसखरे आदमी उसके कपड़े,

जूते, भावभगी और उसकी चाल की नक़ल करके अपने साथियों को हँसाते थे। थियेटरों में अक्सर लोग उसका मुक़ाबला करने का उद्योग करते थे। उसकी प्रशंसा करने वालों की गणना नदी के किनारे की बालु-कणों के समान असंख्य थी। अमेरिका के समान ही दूसरे देशों की जनता भी उसे अपना प्रिय-पात्र समझती है। इसका पता १९३१ ई० में, उसके पेरिस आने पर लगा था। पेरिस की जनता ने उसका एक सम्मान्यअतिथि की तरह स्वागत किया, जिसे देखकर यह जान पड़ता था, मानो वह उस देश का बड़ा-भारी शुभचिन्तक और सेवक है।

यदि कोई मनुष्य अपने पराक्रम और सौभाग्य से अपनी दरिद्रता को दूर कर, असीम धन और ख्याति प्राप्त कर लेता है, तो प्राय उसके सजाति उसे देखकर जलने लगते हैं। वे उसकी छोटो-से छोटी ग़लतियों को भी बहुत बड़ा रूप देकर नाना प्रकार की समालोचना करना प्रारम्भ कर देते हैं।

चार्ली चैप्लिन के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसक उन आवारा और आलसी रिश्तेदारों न, जो मेहनत करक कमाने में अपना अपमान समझते थे, यह कहना शुरू किया कि चार्ली का कर्त्तव्य है कि वह उनकी सहायता करे। कोई उससे नौकरी माँगता था, कोई पैसे की फर-मायश करता था, और कोई कोई तो सहायता न मिलने

चार्ली के बच्चे

पर उसे नुकसान पहुँचाने तक की धमकी देते थे। कम्प-नियों के कई एक्टर स्वयं उसके नाट्य की नक़ल करते थे, और लोगों को कहते थे कि चार्ली उनकी नक़ल करता है। वे कम्पनियाँ, जो उसके मुक़ाबले में हार जाती थीं, बड़े-बड़े इश्तहार छापकर उसे बदनाम करने का यत्न करती थीं। यदि इन बातों में कुछ भी सत्यता होती, तो चार्ली को अवश्य ही नुक़सान उठाना पड़ता, परन्तु हॉलीवुड की जनता उसके कामों को देख चुकी थी, इसलिए उस पर इन बातों का कोई असर न हुआ।

कुछ मनुष्यों का अपने इस घृणित प्रयत्न की सफलता पर विश्वास था, क्योंकि उनके इस काम से, पहले कितने ही मनुष्यों का अध पतन हो चुका था। और यही कारण था कि चार्ली ने अपने देश को छोड़कर कैलीफोर्निया में आना स्वीकार किया, क्योंकि वहाँ उसके कुछ ऐसे हितैषी मौजूद थे, जो सच्चे हृदय से उसके कार्य की प्रशंसा करते थे,और अनेक बार उसे वहाँ आने का अनुरोध कर चुके थे।

जब लड़ाई शुरू हुई, तो चार्ली और उसकी कम्पनी के अँग्रेज एक्टरों ने युद्ध में अपनी योग्यतानुसार कुछ सेवा करनी चाही। इसके लिये उसने कई बार वाशिंगटन में अँग्रेजी राजदूत को भी लिखा। पर इतना करने पर भी उसके शत्रु सदा झूठी कथाएँ छाप-छापकर उसे बदनाम करने का यत्न करते रहते थे।

सौभाग्यवश चार्ली नहीं बुलाया गया। परन्तु हॉलीवुड में रहकर ही उसने उससे कहीं अधिक काम किया, जितना कि वह युद्ध में जाकर कर सकता था। यदि वह सेना के साथ रहता, तो शायद मित्र पक्ष को उसके कामों से इतना लाभ न पहुँच सकता था।

इन्हीं दिनों में चार्ली की भेंट स्कॉटलैंड के प्रसिद्ध मज़ाक़िया-एक्टर (हैरी लॉडर) से हुई। जिन लोगों ने सीधे-साधे चार्ली और लम्बी-लम्बी बातें मारनेवाले हैरी लॉडर की मुलाक़ात देखी, उन्हें बड़ा ही आनन्द आया था।

इस मिलन ने एक नया ही काम किया। दोनों एक्टरों ने चार्ली के बनाये हुए एक छोटे-से खेल में काम किया। तैयार होने पर इस फ़िल्म का बड़ा नाम हुआ, और हैरी लॉडर की इच्छानुसार उसकी सारी आमदनी घायल योद्धाओं की सहायतार्थ दे दी गई।

इसके बाद तो चार्ली ईसानी-कम्पनी का एक स्थायी कोष होगया। मिस्टर जी० ए० स्पूर अपनी असीम आमदनी को देख-देखकर खुशी से पागल हो रहे थे। उन्हें निश्चय था कि साल खतम होने पर चार्ली तनख्वाह बढ़ाने को कहेगा। इसकी उन्हें अभी से चिन्ता थी। चार्ली एक सोने की खान के समान था। परन्तु सोने की खान बहुत धन देनेवाली होने के साथ बड़े खर्चवाली भी होती है। जी० के० स्पूर समझते थे कि चार्ली अब अपना मूल्य

समझने लगा है, इसलिये इतना अधिक वेतन देने पर भी वह सन्तुष्ट न होगा, और अपनी तनख्वाह कई-गुनी बढ़ाने को कहेगा।

अभी तक चार्ली ने भविष्य के लिये कुछ नहीं कहा था। वह पहले की तरह अपने कार्य में तत्पर था। अपने काम में उसे बराबर कामयाबी हो रही थी। उसके "Charlie's New Job", "A Night Out", "The Champion"-इत्यादि खेल जनता के लिये असीम हास्य-प्रद सिद्ध हुए थे।

उसका ईसानी कम्पनी के साथ किया हुआ ठका १९१५ के नवम्बर मास मे खत्म होगया। इस समय वह अमरीका का सब से बड़ा फिल्म-समालोचक और एक्टर था, यद्यपि उसे अभी केवल दो साल ही काम करते हुए थे।

जी० के० स्पूर न उसकी बड़ी प्रशंसा करते हुए उसका वेतन ५००० डॉलर प्रति सप्ताह करने की इच्छा प्रकट की।

चार्ली यह खबर सुनकर प्रसन्नता से दीवाना हो उठा, और अपने भाई सिडनी को यह समाचार देने दौड़ा। पर सिडनी को इस समाचार से कोई आनन्द न आया। उसके खयाल में चार्ली की योग्यता के लिये १००० पौण्ड वेतन प्रति सप्ताह तक एक साधारण बात थी। उसने समझा कि सिडनी उसकी बात नहीं समझ-

सका है, इसलिये चार्ली ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा—"भाई, जरा चिट्ठी खोलकर तो देखो !" "हाँ", उसके भाई ने उत्तर दिया—'यह बहुत कम है। तुम्हें १०००० डॉलर प्रति सप्ताह मिलना चाहिये था।"

चार्ली ने सोचा कि जल्दी-से ठेका कर लेना चाहिये, नहीं तो इस मौके के निकल जाने का भय है। और उसके भाई ने सोचा कि इसे स्वीकार करना एक बड़ी मूर्खता होगी। कुछ दिन दोनों इसी विषय पर बहस करते रहे। लोग कहते हैं कि कई बार चार्ली को इस काम से रोकने के लिये उसके भाई को बल-प्रयोग करना पडा। सिडनी ने चार्ली की सब से बडी प्रेम-पात्री इडना पुर्वियन्स और उसके कई मित्रों को उसे ईसानी-कम्पनी के साथ ठेका करने से रोकने के लिये कहा। और उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। इससे निबटकर सिडनी अपने भाई के लिये दूसरी नौकरी ढूँढने न्यूयॉर्क चला गया।

चार्ली तार देकर न्यूयॉर्क बुलाया गया। बातचीत शुरू होगयी। कितनी ही फ़िल्म-कम्पनियों के मालिकों ने चार्ली को लालच-खुशामद तथा अन्य अनेक उपायों से अपने यहाँ रखने का यत्न किया। अन्त में 'म्युचुअल मोशन पिक्चर कम्पनी' के साथ उसका फ़ैसला होगया। फ़ैसले के अनुसार चार्ली को १०००० डॉलर प्रति सप्ताह मिलने लगा। फ़िल्म कम्पनी के मालिक ने यह भी कहा कि यदि

वह उनके साथ साल-भर का ठेका करले, तो उसे सरखत लिखने के बाद ही १५००० डॉलर पारितोषक दे दिया जायगा।

अपने भाई की योग्यता के विषय में सिडनी का अनुमान बिलकुल ठीक निकला। उसे इस मामले में ३५००० डॉलर कमीशन मिला।

चार्ली इस समय केवल तीस साल का युवक था, और उसे एक लाख पौण्ड साल से भी अधिक वेतन मिलता था! अपने भाग्योदय की यह कल्पना उसने न की थी। जब सरखत लिखकर वह 'म्युचुअल-कम्पनी' के ऑफ़िस से घर आया, तो उसन अपनी वास्कट से १५००० का चेक निकालकर सिडनी को दिखाते हुए कहा—"भाई, यदि अब वह मुझे एक पैसा भी न दें, तो पर्वाह नहीं है। बस, अब तो सब से पहले मैं पूरी एक दर्जन नेक्टाई खरीदे डालता हूँ।"

सन् १९१३ ई० में, जिस समय कैलीफ़ोर्निया में चार्ली चैप्लिन का भाग्योदय हो रहा था, उस समय हॉलीवुड को कोई विशेष महत्व प्राप्त नहीं था, और अमेरिका के सिवा दूसरे देशों के लोग उसे बहुत ही कम जानते थे। उसकी उन्नति भी चैप्लिन के समान ही आश्चर्यजनक और शीघ्रगामी है। हॉलीवुड चित्रपट के व्यापार-द्वारा संसार के करोड़ों आदमियों म केवल दो साल में प्रसिद्ध होगया है।

भाग्य की लीला विचित्र है। वह क्षण भर में एक हीन-हीन मनुष्य को अपनी विशाल कृपा-द्वारा धन कुबेर बना

सकता है, और वही एक सम्राट् को पल-भर में नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

सन १९१४ ई० में साँवले रँग का चैप्लिन घबराई सूरत बनाये हुए हर रोज शाम को अपना सारा काम समाप्त कर, लैविज रेस्टोरैण्ट में जाया करता था। परन्तु बाद में उसका वहाँ जाना अचानक बन्द होगया। क्योंकि वहाँ उन दिनों मैरी पिकफोर्ड हर रोज भोजन करती थी। इसके सिवा श्रोवेन मूर, मैबल नॉरमण्ड, चार्ली मुरे, डी०डब्ल्यू०ग्रिफिथ मैसी वैरिस्केल, रूथ रोलैण्ड, डास्टिन फर्नेल और चार्ली रे इत्यादि अभिनेता भी वहीं रहा करते थे। चार्ली का अन्यतम प्रशासक मैक सेनेट भी वहीं रहता था, और उन लोगों के सामने सदा उँगलियाँ उठा-उठाकर उसकी प्रशंसा करता रहता था।

फ़िल्म-संसार को यह सुनकर बडा आश्चर्य हुआ कि चार्ली चैप्लिन को २००० पौण्ड प्रति-सप्ताह वेतन मिलेगा। यह एक आश्चर्य का विषय था, क्योंकि उस समय के सब से बड़े एक्टर विल रोगर्स का वेतन ३६०० पौण्ड सालाना हिक था। ऐसी हालत में म्युचुअल-कम्पनी का चार्ली-जैसे नौसिखिये एक्टर के साथ इतना बडा ठेका करना उसकी बड़ी-भारी फ़जूल-खर्ची समझी गई। पर कम्पनी व्यापार के तरीक़े अच्छी तरह जानती थी। उसे मालूम था कि अच्छे चित्रपट तैयार होने पर बेहद रुपया कमाया जा

सकता है। चैप्लिन को बृटिश प्रधान-मन्त्री से बीस गुना अधिक वेतन देकर भी उन्होंने पहले से कहीं अधिक धन कमाया।

उसके ठेके के अनुसार चैप्लिन को एक वर्ष में बारह चित्रपट तैयार करने थे।

चार्ली के एक्टिंग का ढंग सीधा-सादा होने पर भी उसके साथ काम करनेवालों को असुविधा होती थी, कारण कि उन्हें चित्रपट का वास्तविक ज्ञान न था।

कभी-कभी वह विषय सोचने में कई-कई दिन लगा देता था, और तब तक स्टुडिओ का सारा काम बन्द रहता था। उस समय कम्पनी के सारे आदमी खूब आनन्द करते थे। इसके प्रतिकूल कभी कभी चार्ली हफ्तों रात दिन काम करता रहता था। उस समय किसी को भी विश्राम करने की नौबत न आती।

म्युचुअल-कम्पनी के साथ चार्ली का पहला सप्ताह उसके जीवन में सब से अधिक असफल समय रहा है। और कम्पनी मालिकों का उतना समय अवश्य ही बड़ी चिन्ता में बीता होगा। इसका कारण यह था कि चैप्लिन पहले दिन बिना कोई विषय सोचे ही स्टुडिओ में आगया। कम्पनी के सब आदमी और कैमरेवाला उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे, पर उसके पास कोई काम ही न था। वह इस फिक्र में था कि नये मालिकों को अपने हुनर का

कोई कमाल दिखाये, पर बेहद दिमाग़ लड़ाने पर भी उसे कोई मन-माफ़िक़ विषय न मिलता था। कुछ देर के लिये वह वहाँ खड़े हुए सब लोगों को भूल गया, और हृदय में आनेवाले भावों को ज़ोर-ज़ोर से गुनगुनाता रहा। फिर तुरन्त ही उसने उनका खण्डन कर दिया। उसके कई मित्रों ने भी उसे कई विषय बताये, जो उसने बड़े ध्यान से सुने। पर सुनने के बाद उसने उन्हें भी सिर हिलाकर अस्वीकार कर दिया। उसने कहा कि मैं कोई अत्यन्त सार-गर्भित और हृदयग्राही भाव चाहता हूँ। दिन पर दिन बीतने गये, पर वह कुछ न कर सका। मामला गम्भीर हो गया। चार्ली बिलकुल गुम सुम रहने लगा। कम्पनी को भी अपने काम की चिन्ता होने लगी। म्युचुअल कम्पनी का मैनेजर भी चार्ली को देखकर मुँह बनाने लगा।

एक हफ्ता बीत जाने पर चार्ली प्राय निराश होगया। उसके दिमाग़ में कोई भाव ही न आता था। उसने इस अपनी असफलता का एक चिन्ह् समझकर नौकरी छोड़ने का इरादा किया।

एक दिन वह लॉस एञ्जेल्स की एक बड़ी दूकान में कुछ ख़रीदने गया था, वह काउण्टर के पास खड़ा हुआ था, अचानक उसकी दृष्टि बिजली की सीढ़ी पर पड़ी, जो ग्राहकों को ऊपर के खण्ड में ले जारही थी। ज्यों-ज्यों वह देखता गया, त्यों-त्यों उसके दिमाग़ में एक विचार आता गया।

उसने एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की, जो निचले खण्ड में आया है, और दौड़कर ऊपर जाते हुए जीने पर चढ़ना चाहता है। बस, इसी कल्पना विन्दु पर उसने अपना भावी प्रहसन केन्द्रित कर दिया, और दौड़कर उसी समय कम्पनी को टेलीफोन किया—"मेरे लिये तुरन्त एक बिजली की सीढ़ी तैयार करो, और सब आदमियों को भी तैयार हो जाने के लिये कह दो। इसके अतिरिक्त वहाँ स्टोर का सीन भी तैयार रहना चाहिये।"

स्टुडिओवालों के जान-सी आगई। वे सब बड़ी शीघ्रता से काम करने लगे। चैप्लिन की इच्छानुसार सब सामान तैयार कर दिया गया। इसी घटना के आधार पर चैप्लिन ने बड़ी चतुरतापूर्वक "The Floor walker"-नामक एक अत्युत्तम प्रहसन तैयार किया।

हम चार्ली के एक्टिंग की स्पष्टता के विषय में पहले भी कह चुके हैं। इस विषय में कितने ही प्रमाण दिये जा सकते हैं, परन्तु विस्तार भय से उनमें से एक-दो लिखना ही पर्याप्त होगा। जिन्होंने उसका 'काउण्ट'-नामक चित्र-पट देखा है, उन्हें उसके विचित्र नाच का भी ध्यान होगा। उस खेल में वह एक दर्जी का मातहत बनता है। अपने अफ़सर-द्वारा प्राय. दण्डित और अपमानित होने के कारण वह मातहत उनसे घृणा करने लगता है। अन्त में एक दिन वह उससे बदला लेने का निश्चय कर लेता है। उसका

अफ़सर एक नाच में जाता है। चार्ली भी उसे चिढ़ाने के लिये बिना बुलाये ही वहाँ जा पहुँचता है। उसे किन्हीं विशेष वस्त्रों की आवश्यकता न थी। वह अपने रोज़ के कपड़े पहने हुए बिजली की सीढ़ी द्वारा ऊपर चला गया। उसने वहाँ की सब से सुन्दर लड़की को इशारा करके अपने पास बुलाया, और उसके साथ नाचना प्रारम्भ कर दिया। उसके अफ़सर ने जब उसे वहाँ देखा, तो मार पीट कर बाहर निकाल देने का यत्न किया। उस समय दोनों एक दूसरे को लात मारते हैं, और अन्त में चार्ली की जीत होती है। इस नाच के लिये चैप्लिन ने लगातार तीन सप्ताह तक एक बैण्ड रक्खा था, और मिस इड़ना पुर्वियन्स की सहायता से नाच सीखा था।

'पानब्रोकर' (Pawnbroker) के एक सीन में एक ग्राहक चार्ली को एक घड़ी देता है। वह उसे एक मिस्त्री के पास लेजाकर उसके सब पुर्जे अलग अलग कराता है। इसके बाद मिस्त्री घड़ी के पुर्जे काउण्टर पर जाकर डाल देता है चैप्लिन उन्हें उठाकर ग्राहक को देने का यत्न करता है, और उसे यह विश्वास दिलाने की चेष्टा करता है कि अब घड़ी बिलकुल ठीक चल रही है।

एक सीन में वह एक सीढ़ी पर चढ़कर एक खिड़की की सफ़ाई करता है। वहाँ अपनी अजीब चाल का ढँग दिखाने के लिये उसने कई सप्ताह अभ्यास किया था।

उसके सारे नाट्य का विषय बिलकुल अपना होता है। वह अपने खेल का केवल विषय-मात्र ही सोचता है। शेष वृद्धि-विस्तार के लिये वह अपनी तात्कालिक बुद्धि का प्रयोग करता है। यदि कोई सीन उसे पसन्द नहीं आता, तो वह उसे निस्सकोच नष्ट करा देता, और उसकी जगह नये सिरे से परिश्रम करता है। वह ऐसा कोई काम पसन्द नहीं करता, जो किसी प्रकार भी खेल को कहानी की असलियत से अलग करता हो।

कभी-कभी वह लड़कों की तरह, तरह-तरह के खेल खेला करता था। उस समय कम्पनी का सारा काम बन्द रहा करता। जब 'पानब्रोकर'-चित्रपट तैयार किया जा रहा था, उस समय वह लगातार पन्द्रह दिनों तक केवल एक गीत पन्द्रह बाजों पर बजाने का अभ्यास करता रहा था। उसके बाद उसने सब कर्मचारियो को बुलाकर वह गीत सुनाया, और कुछ बाजों के साथ वह गीत खेल में गाया गया।

उसे छोटे बच्चों के साथ फिरने में बड़ा आनन्द आता था। जब कभी कोई माता पिता अपने बच्चों को चैप्लिन का काम दिखाने स्टुडिओ में ले आते थे, उस समय चार्ली अपने सब काम छोड़कर उनके साथ खेलने में लग जाता था। इतना सब-कुछ करने पर भी वह कभी अपने काम में रुकावट नहीं डालता था। अपने खेल-इत्यादि के कारण यदि

कभी कम्पनी का काम बन्द भी रखता, तो कभी कभी लगातार कई चित्रपट तैयार करके उस कमी को पूरा कर देता था। इसलिये उसके मालिकों को कभी उसकी शिकायत का अवसर नहीं मिलता था। जब वह कई कई दिनों तक कोई खेल खेला करता, या इसी तरह का कुछ और काम करता रहता, उस समय लोग यही सोचा करते थे कि वह किसी विषय का चिन्तन कर रहा है।

वह अपने सहयोगियों के साथ बड़े प्रेम का व्यवहार करता था। छोटे-से-छोटे कर्मचारी को भी वह अपना मित्र समझता था, और उनकी हर-एक कठिनाई में सहायता करने को उद्यत रहता था।

चार्ली चैप्लिन की कई नायिकाएँ थीं, जिनमें से प्रमुख के नाम मर्ना केनेडा, मिल्ड्रेड हैरिस इडना पुर्वियन्स, ज्यॉर्जिया हेल और लिटा ग्रे हैं।

वह इतनी जल्दी-जल्दी उन्हें क्यों बदलता था,—यह उसके सिवा और कोई नहीं जानता। उसके कुछ घनिष्ट परिचित कहते हैं कि इसका कारण केवल उसकी ऊँचे दर्जे की नाट्य-कला ही है। मिस्टर चेस्टर कर्टिनी के लेख से पता लगता है कि उसे अधिक झञ्झट और जिम्मेदारी से घृणा है। उसे केवल अपने काम को सदा नया सौन्दर्य देने की ही चिन्ता रहती है, इसीलिये वह सदा अपनी इच्छानुसार नायिका रखता है।

इस लेख में सत्यता हो सकती है, परन्तु फिर भी इस विषय पर कुछ निश्चयपूर्वक लिखना कठिन है। और चैप्लिन की प्रकृति देखने से भी ऐसा जान पड़ता है, कि उसे भी शायद ही इस विषय का ज्ञान हो।

जहाँ तक हम जानते हैं, हर एक खेल में नायिका बदलना अपने सिर एक चिन्ता और जिम्मेदारी मोल लेना है। क्योंकि प्रत्येक नवीन एक्ट्रेस को अपनी इच्छानुकूल बनाने के लिये उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। किसी खेल में प्रधान नायिका का कार्य कुछ कम जिम्मेदारी का नहीं है। उसके कार्य पर ही खेल का भविष्य निर्भर होता है। जहाँ एक व्यक्ति की समालोचना करनेवाले लाखों-करोड़ों व्यक्ति हों, वहाँ उसका एक्टिंग कितना उच्च होना चाहिये—इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है।

चैप्लिन को यह सब मालूम होने पर भी शायद अपनी योग्यता पर भरोसा था। इसीलिये उसे निश्चय था कि वह उन्हें सिखा पढ़ाकर अपने काम-लायक़ बना लेगा।

रङ्ग-मञ्च पर काम करना साधारण जनता की समझ से कहीं अधिक कठिन है। इसलिये जो भार चैप्लिन ने अपने ऊपर लिया, उसमें अवश्य ही भयङ्कर अड़चनें पड़ी होंगी। पर वह उससे घबराया नहीं। उसने सभी नई नायिकाओं को धैर्यपूर्वक उनकी योग्यता के अनुसार प्रारम्भिक नियम समझाये। इस कार्य में उसने बड़े

और आत्म सयम का परिचय दिया। इडना पुर्वियन्स के सिवा किसी नायिका में नाट्य कला का स्वाभाविक गुण न था। परन्तु इसकी ओर कोई ध्यान न देकर उसने न्हें काम सिखाना शुरू कर दिया। वह ह फ्तों और महीनों तक अभ्यास के समय उनका निरीक्षण करता रहा। उसे कठिनाइयों का अनुभव था, इसलिये यदि कोई लड़की बार-बार गलती करती, तोभी वह उसे अत्यन्त प्रेमपूर्वक समझा देता था। अन्तिम परीक्षा के समय यद्यपि सभी ने चतुराई से काम किया, परन्तु इडना पुर्वियन्स ने उन सब में अधिक नाम पाया। उसने मिल्ड्रेड हैरिस और लिटा ग्रे क साथ क्रमश विवाह भी कर लिया, परन्तु यह सम्बन्ध चिरस्थायी न रह सका। बाक़ी लड़कियाँ चैप्लिन के साथ काम करती रहीं, और उसके मन में उनकी याद तक बाक़ी नहीं है।

हजारों मनुष्य यह अनुमान करते होंगे कि फेयरीलैण्ड की राजधानी हॉलीवुड धन धान्य से पूर्ण होगी, वहाँ की जनता सुखी होगी, और वहाँ जाकर किसी भी मनुष्य को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कठिनता नहीं होती। परन्तु दुःख के साथ कहना पडता है कि ऐसे मनुष्यों के लिये हॉलीवुड में कोई स्थान नहीं है। हॉलीवुड के व्यापारिक केन्द्र होने पर भी वहाँ वही मनुष्य धन कमा सकता है, जो अत्यन्त परिश्रमी, चतुर और उद्योगी हो।

इडना पुर्वियन्स कैलीफोर्निया के एक छोटे से शहर में टाइपिस्ट थी, जो उसकी आजीविका के लिये पर्याप्त न था। अन्त में उसने तङ्ग आकर अपनी नौकरी छोड दी। वह बडी आशा से हॉलीवुड में अपना भविष्य सुधारने चली गई। इडना युवती थी। योवन के साथ साथ उसमे चञ्चलता और मादकता—आदि सभी गुण थे। वह असीम सुन्दरी थी। परन्तु उसकी उक्त विशेषतायें प्रशंसनीय होने पर भी उसे किसी फिल्म कम्पनी में काम न दिला सकीं। तब मिस पुर्वियन्स सोचने लगी कि उसने अपनी वह छोटी नौकरी छोडकर अच्छा नही किया। उसने सारी कम्पनियों में टक्करें मारकर यह देख लिया कि यदि कहीं एक व्यक्ति की भी आवश्यकता होती थी, तो उसके लिये एक-से-एक चतुर सैकडों आदमी वहाँ उपस्थित हो जाते थे। एक-आध जगह उसकी योग्यता जानने के लिये प्रश्न किये गये, परन्तु उसने पहले कभी अभिनय न किया था, इसलिये वह नौकरी न पा सकी।

अन्त में वह भी औरों की तरह चैप्लिन-स्टुडिओ के दरवाजे पर खडी रहने लगी। इस तरह उसे कितने ही दिन बीत गये। हठात् एक दिन चैप्लिन से उसकी कुछ बातें होगईं। उसके रूप ने चैप्लिन के हृदय में कुछ स्थान प्राप्त कर लिया, इसलिये उसने उसे काम सिखाने का निश्चय किया। इससे उसे शान्ति मिली, और वह वहाँ काम करने लगी।

कुछ दिन तक तो इडना को यह काम इतना कठिन जान पड़ा, और उसने अभिनय के प्रथम विषयों में ही मन्दता दिखाई कि चार्ली को निश्चय होने लगा कि उसके साथ समय खोना व्यर्थ है। फिर भी वह उसके साथ परिश्रम करता रहा। अन्त में इडना को अभिनय-रहस्य समझ में आने लगे, और फिर तो उसने इतनी उन्नति की कि उसके कार्य को देखकर लोगों को आश्चर्य होता था। और इसी प्रकार यत्न करते करते एक वह दिन आगया, कि इडना कम्पनी की प्रधान अभिनेत्री मानी जाने लगी।

डार्विन ने बिना तजुर्बा किये हुए ही बन्दर से मनुष्य की उत्पत्ति मान ली। परन्तु चार्ली चैप्लिन अपने प्रत्येक कार्य का तजुर्बा कर लेता था। इसलिये आज तक किसी ने उसके कार्यों की निन्दा करने का साहस नहीं किया। एक दफा चार्ली ने एक चित्रपट तैयार किया, जिसमे उसने बिना अपनी मजाक़िया मूछें, बूट और हैट इत्यादि पहने हुए ही एक्ट किया। उस खेल में केवल अकेला वही एक्ट करता था। यह उसके सब प्रयोगों से कठिन था। इस खेल का नाम था 'एक बजे'। इसमे उसने शाम को एक मजाक़िया दावत से वापस आते हुए एक युवक के कष्टों का दिग्दर्शन कराया था।

चित्र जब पहली दफा लॉस ऐंजिलस में दिखाया गया, उस समय जनता ने उसको बहुत पसन्द किया, और

मैरी पिकफ़ड, डी० डब्ल्यू० ग्रिफिथ, चार्ली चैप्लिन और डगलस फेयरबैंक्स।

उसकी सफलता पर उसे बधाइयाँ दीं। परन्तु उस पर इनका कोई असर न हुआ। खेल समाप्त होने पर जब लोगों ने उसके अपने विचार पूछे, तो उसने कहा कि यदि एक बार और यत्न किया जाय, तो अवश्य सफलता मिल सकती है। और उसका यह कहना ठीक था। उसके पास कई महीनों तक हज़ारों चिट्ठियाँ आती रहीं, जिनमे जनता चार्ली को अपनी उसी अजीब शक्ल में काम करने की सलाह देती थी। लोग उसे अपने उन्हीं बेढंगे पैजामे, बड़े-बड़े जूते और अजीब मूछों में काम करने की प्रेरणा करते थे।

चार्ली उनका मतलब समझ गया। हास्य-रस में उस की ऊँचे दर्जे की योग्यता के कारण दूसरे एक्टर उसका सम्मान करते थे। मिस्टर चेस्टर कर्टिनी 'फ़िल्म वीकली' में लिखते हैं कि जब मैंने 'The Vagrbond' में चार्ली को रईस की लड़की से पृथक् होते देखा, और लड़की के अन्तिम अभिवादन के उत्तर में जब वह अपने पतले कन्धे अजीब तरह से हिलाकर चल दिया, उस समय वहाँ बैठे हुए सारे मनुष्यों की आँखों में आँसू भर आये थे।

सातवाँ परिच्छेद

—❀—

एक बार किसी समाचार-पत्र के सम्पादक ने चैप्लिन के लन्दन में आने का समाचार सुनकर उससे मिलने की इच्छा प्रगट की। परन्तु उसने कहा कि मैं जनता को उसके आन्तरिक जीवन का दिग्दर्शन कराना चाहता हूँ। इसलिये मेरी इच्छा है कि मैं उससे उस समय मिलूँ, जब वह अपने मित्रों के साथ किसी दावत में शामिल होकर निस्संकोच हँसी मजाक कर रहा हो। मैं उसकी उस समय की तस्वीर खींचकर जनता को दिखाना चाहता हूँ कि चैप्लिन की अन्दरूनी जिन्दगी और बाहरी रहन-सहन में क्या अन्तर है।

शनै-शनै लोगों को चैप्लिन के इँग्लैण्ड आने का समाचार मिला। सैकड़ों फ़ोटोग्राफ़र उसकी तस्वीरें खींचने आने लगे। अखबारों में उसके स्वभाव, सुशीलता और साहस-आदि गुणों की बहुत दिनों तक चर्चा होती रही। समाचार लानेवाले जानते थे कि उनके मालिक चैप्लिन का हाल सुनने को बहुत उत्सुक रहते हैं, इसलिये वे उन्हें प्रसन्न

करने को अधिक-से अधिक संख्या में उसका समाचार लाते थे। चारों ओर उसी की कहानियाँ होती रहती थीं। जनता उसके-जैसे कालर, नेकटाई, उसके-जैसे कपड़े, सिगरेट-इत्यादि ही बरतना पसन्द करती थी। और इन समाचारों के देनेवाले अमरीकन पत्र अपनी दिन दिन बढ़ती हुई माँग के कारण मालामाल हो रहे थे। 'हॉलीवुड' से बहुत दूर रहनेवाले मनुष्य भी उसे देखने और बातें करने की इच्छा से वहाँ जाते थे।

वह उसे देखने आये हुए बच्चों के साथ इधर-उधर घूमा करता, समाचार पत्र के एजेण्टों से प्रेमपूर्वक मिलता और अपनी प्रशंसा में छपी हुई कहानियों का समाचार सुनकर आश्चर्य से कन्धे हिला देता था। कुछ दिनों तक उसने जनता की इस माँग को पूरा किया। जनता का यह अनुराग उसके लिये लाभदायक था, और उसका कर्तव्य था कि अपनी प्रशंसा करनेवालों का सत्कार करे। परन्तु उनका सारे दिन का जमाव उसे दुःखदायी प्रतीत होने लगा, और वह ऐसा अनुभव करने लगा कि वह लोग उसे एक नुमायश का खिलौना समझने लगे हैं।

उसने सोचा कि जनता का उसके आन्तरिक जीवन में यह हस्ताक्षेप ठीक नहीं है। उसे इसका उपाय मिल गया, और उसने उस पर अमल करना शुरू कर दिया।

स्टुडिओ का द्वार बन्द कर दिया गया। बिना काम

कोई उससे न मिल सकता था। इस तरह यहाँ जनता का व्यर्थ जमाव बन्द हो गया।

उसे अब कुछ शान्ति मिलने लगी। परन्तु जनता की माँगें उसी तरह बढ़ती रहीं। मिलना बन्द होजाने पर भी रिपोर्टर किसी-न किसी तरह समाचार इकट्ठा कर ही लेते थे। लोग उसके मित्रों को हजारों प्रश्न कर, तङ्ग कर डालते थे, और अन्त में उन्हें खिन्न होकर उत्तर देने से इन्कार करना पड़ता था। अब चैप्लिन को कुछ महीनों के लिये शान्ति मिल गयी। और दूसरे एक्टरों की ख्याति होती रही। परन्तु उसकी मुसीबत अब भी उसके साथ थी, इसलिए जनता को ज्यों ही चैप्लिन का एक एक्ट्रेस से प्रेम करने का समाचार मिला, त्यों ही फिर उसके घर पर भीड़ लगनी शुरू होगयी।

उसके प्रेम की वाहियात कहानियाँ पत्रों मे प्रकाशित होने लगीं।

चार्ली चैप्लिन का दो बार विवाह हुआ। पहला मिल्ड्रेड हैरिस के साथ १९१७की सितम्बर को, और दूसरा 'लिटा ग्रे' के साथ १९२४ ई० में। परन्तु दोनों ही दुःख, दायी साबित हुए और तलाक़ देकर तोड़ दिये गये।

कई स्त्रियों ने चैप्लिन को प्रेम किया, और उनके द्वारा जितनी श्रद्धा और प्रेम चैप्लिन को प्राप्त हुआ उतना 'वैलेण्टिनो'-आदि किसी एक्टर को प्राप्त न हुआ होगा। वे

चार्ली को प्रेम करने की अपेक्षा उसके एक्टिंग को प्रेम करती थीं। परन्तु वे यह भी जानती थीं कि संसार में उसका कोई भी अपना कहने योग्य नहीं है, उसका जीवन ऐश्वर्य और सद्विचारों से परिपूर्ण होने पर भी सुखमय नहीं है। यह एक ऐसा विचार था, जिसने उनके हृदयों में उसके लिये अनुराग का स्वाभाविक श्रोत उत्पन्न कर दिया, और वे उसे प्यार करने लगीं।

जितनी लड़कियों का परिचय चैप्लिन के साथ हुआ था, उनमें से केवल 'पुर्वियन्स' ही उसकी वास्तविक स्थिति स परिचित थी। क्योंकि बहुत दिनों तक वे एक गहरे दोस्त की तरह एक-साथ रहे थे। वह कभी-कभी उस पर शासन करती थी, विवाह का निश्चय करने से पूर्व वह उसके साथ निस्संकोच भ्रमण करती थी। वे दोनों सदा एक दूसरे के दुःख-सुख में मित्र की भाँति सहायता करते थे। पुर्वियन्स बड़ी गम्भीर लड़की थी, इसलिये उसके विचारों को न जानते हुए भी चार्ली के मित्र कहते हैं कि यदि चार्ली उससे विवाह करता, तो अवश्य सुखी होता। परन्तु ऐसा न हुआ। लोगों के कथनानुसार यदि चार्ली उसे प्रेम करता होता, तो वह कभी दूसरे स्थान पर विवाह-सम्बन्ध न करता।

इसके बाद उसका सम्बन्ध मिल्ड्रेड हैरिस से हुआ। वह उस युवती के सौन्दर्य की ओर एक-दम आकर्षित होगया। उसके सुनहरे घूँघरवाले बाल और उसकी

आँखों ने उसे दीवाना बना दिया। वह उसे अपने साथ भोजन करने को बुलाता, हर रोज उसके लिये सुन्दर फूल-इत्यादि भेजता, और सदा यही यत्न करता था कि वह अधिक से अधिक समय तक उसके पास रहे। इसीलिये अपनी १५ साल की उम्र में ही मिल्ड्रेड स्टुडिओ में उसके काम पर नियुक्त होगई। चार्ली उस स्थिति से बहुत दूर चला गया था, जहाँ अवस्था और धन-सम्पत्ति प्रेम के मार्ग में बाधक होते हैं। मिल्ड्रेड के चले जाने पर उसे ऐसा प्रतीत होता था, मानो सारे सुख और समृद्धि का ही लोप होगया हो। वह कड़ाके की सर्दी में भी अपनी मोटर में बैठा हुआ स्टुडिओ से'मिल्ड्रेड'के निकलने की प्रतीक्षा किया करता था।

चार्ली की कोर्टशिप आनन्ददायक न हुई। मिल्ड्रेड अभी सोलह साल की भी न थी। इसलिये उसकी माँ उसे विवाह-योग्य न समझती थी। चार्ली को भी यह बात माननी पड़ी। परन्तु दो साल के बाद १९१७ ई० में उनका विवाह हो ही गया।

उनका विवाह सफल न हुआ। दो साल में ही'मिल्ड्रेड' विवाहित स्थिति से तंग आगई, और तलाक का यत्न करने लगी। उसे तलाक देने की आज्ञा मिल गई, फिर भी चैप्लिन ने कृपा करके उसके भावी व्यय के लिये आर्थिक सहायता का वचन दिया। इस सम्बन्ध ने चैप्लिन के जीवन में एक प्रकाश डाल दिया।

अखबारों ने इस तलाक़ की बड़ी समालोचना की, और शरारतियों ने इस विषय को लेकर तरह-तरह के अपवाद शुरू कर दिये।

इन दोनों प्रेमियों को अपने प्रेम से निराश होना पड़ा था। उनके जीवन में उस आनन्द का नाम भी न था, जिसकी सम्भावना हॉलीवुड में रहनेवाले एक्टरों से की जाती थी। उनका दु:खमय सम्बन्ध केवल उनकी अदूरदर्शिता से क़ायम होगया था, जिसका बहुत दिनों तक रहना असम्भव था।

चैप्लिन को इस तलाक़ में कोई दु:ख न हुआ, और वह पहिले की भाँति अपने स्टुडिओ में काम करने लगा। उसकी स्त्री ने प्रेसवालों के पूछने पर कहा कि चैप्लिन एक विचित्र प्रकृति का आदमी है। वह घण्टों उसे अकेली छोड़कर समुद्र के तट पर फिरने चला जाता है। और जब कभी किसी ख़ास विषय को सोचता होता है, तब तो वह कई कई हफ्तों तक घर मौजूद नहीं रहता। कभी-कभी उसे गाने की धुन सवार होती है। उस समय वह 'पियानो' या 'वायलिन' आदि कोई साज लेकर दस बारह घंटे तक बजाता रहता है। यद्यपि वह मेरी बीमारी-आदि कष्टों में बहुत ही कृपालु रहता था, फिर भी उसकी वह अजीब प्रकृति और प्रेम शून्य व्यवहार मुझे दु:खदायी प्रमाणित हुए। कैलीफ़ोर्निया की पहाड़ियों में उसके अकेले फिरने और उसके लम्बे मौन ने मुझे विचलित कर दिया। उसने कहा कि मैं

सदा खुशी मे रहना चाहती थी, परन्तु वहाँ इस वस्तु का अभाव था।

पहिले चैप्लिन-जैसे रईस के साथ शादी होने के विचार ने मिल्ड्रेड को प्रसन्नता से पागल कर दिया था। परन्तु विवाह हो जाने पर उसे मालूम होगया कि उसे असीम सम्पत्ति के सिवा और कोई आनन्द न था। मिल्ड्रेड ने यहाँ विवाह से पूर्व अवश्य सोचा होगा, इसलिये जब तक उसे यह निश्चय न हो जाता कि तलाक़ देने के बाद उसे अधिक शान्ति प्राप्त होगी, वह कभी ऐसा न करती। इन बातों से पता लगता है कि चैप्लिन से अपने सम्बन्ध के विषय में जो कुछ उसने कहा है, वह अवश्य सत्य होगा।

चार्ली चैप्लिन १९२० ई० में पहली बार जर्मनी गया। उस समय तक वहाँ पर उसकी तस्वीरों का अधिक प्रचार नहीं हुआ था। वह अपनी "Wonderful Visit" नामक पुस्तक में लिखता है कि जर्मनी की जनता उससे बिलकुल परिचित न थी, इसलिये वहाँ उसका कोई स्वागत न हुआ। एक दिन वह वहाँ के एक बड़े होटल "Palais Hamroth" में खाना खाने गया था, और वहीं उसकी 'पोला नेग्री' से पहली बार भेंट हुई थी।

वह दुःख से कहता है कि यहाँ उसकी उस अजीब शकल का कोई प्रभाव न पड़ा। लोग शाम के कपड़े पहने हुए रोशनी मे जगमगाते भोजन के कमरे में बैठे थे।

चार्ली और उसके साथी अपने दिन के कपड़े ही पहने हुए थे। उन्होंने मैनेजर से खाना मँगाने को कहा, तो उसने उनकी ओर आश्चर्य से देखा, और एक कोने में पड़ी हुई मामूली मेज की ओर संकेत करते हुए बैठने को कहा। यद्यपि चार्ली को यह बात बुरी लगी, परन्तु फिर भी उसने नम्रतापूर्वक उस मेज पर बैठना स्वीकार कर लिया। वह और उसके मित्र उस मेज पर बैठने के लिए जा रहे थे कि अचानक किसी ने उसकी पीठ पर हाथ रख दिया। लास्की कॉर्पोरेशन के प्रसिद्ध एक्टर और "Famous Players' Studio" के मैनेजर ने उसे पहचान लिया था। उन्होंने चिल्लाकर कहा कि हमारी मेज पर आजाओ, पोला नेग्री तुमसे भेंट करना चाहती है। चार्ली को अपना यह सम्मान देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उस कमरे में अमरीकनों का एक बैण्ड भी बुलाया गया था। उन्हें जब यह मालूम हुआ कि आनेवाला व्यक्ति चैप्लिन है, तो उन्होंने कुछ देर के लिये बाजा बजाना बन्द कर, "Hoorty for Charlie Chaplin" के नारे लगाये।

मैनेजर ने फिर आश्चर्य से देखा, परन्तु इस बार उनकी दृष्टि में घृणा न थी।

पोला नेग्री के विषय में चार्ली लिखता है कि वह वास्तव में सुन्दर है। उसके सुन्दर काले घूँघरवाले बाल, और मोती के समान चमकते हुए दाँत इत्यादि सभी कुछ

सुन्दरता का स्थान है। वह दुःख के साथ कहता है कि उसने आज तक कभी इतनी सुन्दर नायिका किसी कम्पनी में नहीं देखी। वह आकर्षण-शक्ति का केन्द्र है। उसकी बोली बड़ी सुन्दर है। उसके मुख से निकलते हुए जर्मन-शब्द बड़े मधुर जान पड़ते हैं। उसका प्रत्येक शब्द गाने को भी मात करता है। शराब का ग्लास देते समय वह मुझे अँग्रेजी में केवल 'Jazz boy Charlie' कहकर सम्बोधन करती थी।

पर चार्ली उसे कोई उत्तर नहीं दे सकता था, क्योंकि जर्मन भाषा से वह बिलकुल ही अपरिचित था। उसके पास में बैठे हुए उसके जर्मन मित्र ने धीरे-से कहा—"चार्ली, वह तुम्हारी ओर खिंचने लगी है क्योंकि उसने अभी मुझे कहा है कि तुम सुन्दर हो।"

चार्ली ने अपने मित्र से कहा कि तुम मेरी ओर से उसे कहो कि मैंने तमाम योरोप में उस जैसी सुन्दरी नहीं देखी।

इसी तरह से उन दोनों में कितनी ही बातें होती रहीं। फिर चार्ली ने उससे स्वयं कुछ कहने की इच्छा से कफमैन से "तुम देवी हो" का जर्मन वाक्य पूछा। कफमैन ने उसे कोई जर्मन शब्द बताया। चार्ली ने हँसते हुए वे शब्द पोला को कहे। पोला चौंक पड़ी। उसने ताली बजाते हुए केवल "Naughty boy" (शैतान) कहा। और वहाँ बैठे हुए सारे आदमी जोर-से हँसने लगे। क्योंकि जो

वाक्य चार्ली ने कहा था, उसका अर्थ था, 'तुम भयकर हो।'

चार्ली ने घर जाकर जर्मन सीखने का निश्चय किया। जब वह क्लब से जाने लगा, उस समय मैनेजर ने उससे कहा—"मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ। मेरा ख्याल है कि आप अमेरिका के कोई बड़े आदमी हैं। मेरे कठोर शब्दों की ओर ध्यान न दीजियेगा। मेरा क्लब आपका स्वागत करने को उद्यत है।"

दूसरे दिन चार्ली एक बड़े वकील के यहाँ दावत में फिर पोला नेग्री से मिला।

अमरीका आने पर जब उसे मालूम हुआ, कि पोला नेग्री भी 'हॉलीवुड' में एक्टिंग करना चाहती है, उस समय उसने धनादि से उसकी बड़ी सहायता की, जिसके लिये वह सदा कृतज्ञ रही।

जब वह अपना पहला विवाह-सम्बन्ध तोड़कर हॉली-वुड में आगई, उस समय से उन दोनों का प्रेम प्रणय में बदलने लग गया, और उन दोनों का विवाह निश्चित होगया।

यह समाचार सब-कहीं फैल गया, कि उन दोनों का शीघ्र ही विवाह होनेवाला है।

यद्यपि चार्ली को भी इन बातों में आनन्द आता परन्तु उसकी स्वाभाविक गम्भीरता इस बात को होने देती थी। अखबारों में पोला नेग्री

की नम्रता और ऊँचे दर्जे के ।एक्टिंग-इत्यादि गुणों की प्रशंसा में लम्बे-लम्बे लेख लिखा करती थीं।

ऐसी अस्वाभाविक घनिष्टताओं का अन्त प्राय निराशा ही होता है, और यही बात यहाँ भी हुई। उनके सम्बन्ध टूटने की खबरें लोगों के मुँह से सुनाई देने लगीं। और ये खबरें ठीक निकली। क्योंकि उन दोनों ने स्वयं अपने विवाह का विचार बदल दिया।

चार्ली और लिटा ग्रे के विवाह के विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है। पाठकों को जानकारी के लिये इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि यह सम्बन्ध भी मिल्ड्रेड हैरिस की तरह स्थायी न रह सका। लिटा ग्रे विवाह के समय केवल सोलह साल की थीं, इसलिये उसे विवाह के बाद आनेवाले भार और चिन्ताओं का कोई ज्ञान न था। लोगों ने उनका विवाह चिरस्थायी बनाने का बहुतेरा यत्न किया, परन्तु सब व्यर्थ गया, क्योंकि उन दोनों को ही उससे सुख न था। उन दोनों में सदा लड़ाई झगड़े होते रहते थे, जिससे उन दोनों का जीवन घोर दु खमय होगया। फिर तलाक़ का समय आगया, और इस कार्य में चैप्लिन को बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी।

कई लोगों ने इस तलाक़ को चैप्लिन के व्यभिचारी और विश्वासघाती होने का कारण बताया। नीज व्यक्तियों ने थेल्मा मॉर्गन कनवर्स, मे मॉलिन्स, जॉर्जिया हेल,

मर्ना केनेडी, और पेग्गी जॉइस-इत्यादि एक्ट्रेसों से उसके अनुचित सम्बन्ध की कल्पित कहानी का प्रचार शुरू कर दिया। परन्तु यह सब मिथ्या है। फिल्म-कम्पनियों में काम करनेवाले सभी प्रसिद्ध एक्टरों को ऐसी बातें सुननी पड़ती हैं। चार्ली चैप्लिन ने जहाँ नाट्य-कला में सर्वोच्च काम करके सारे संसार में ख्याति प्राप्त की है, उसी प्रकार यदि हम निस्वार्थ भाव से उसके सदाचार की समालोचना करें, तो हमें मालूम हो जायगा कि उसका जीवन कितना आदर्शमय है। यद्यपि लोगों ने उसके नाम को अनेक उपायों से कलंकित करने का यत्न किया है, और अगर हम उन सब अफवाहों को एकत्र करें, तो एक बहुत-बड़ी पुस्तक बन जायगी, परन्तु यदि हम उनकी सचाई की तह तक पहुँचने का यत्न करें, तो हमें मालूम हो जायगा कि वे सब कथायें लोगों ने केवल अपनी स्वार्थ रक्षा के लिये या चैप्लिन की बढ़ती हुई ख्याति से जलकर फैलाई हैं

चार्ली अत्यन्त सौन्दर्योपासक है। इसलिये वह सुन्दर बालक या रूपवती स्त्री की ओर तुरन्त आकर्षित हो जाता है। उसे उनके साथ प्रेम करने में असीम आनन्द आता है, परन्तु उसका वह प्रेम विषय वासना से बहुत दूर होता है। मनुष्य प्राय पवित्र प्रेम से गिर जाते हैं, परन्तु चार्ली इससे बिलकुल प्रतिकूल है।

आठवाँ परिच्छेद

सन् १९१७ ई० में चैप्लिन ने स्वतन्त्र व्यापार करने की इच्छा से अपना अलग स्टुडिओ खोलने का निश्चय किया। माल खत्म हो जाने पर जब उसका ठेका म्युचुअल कम्पनी के साथ पूरा होगया, उस समय उसने हॉलीवुड में कुछ जमीन लेकर अपना स्टुडिओ बना लिया। उसका वह छोटा सा स्टुडिओ उसके असीम परिश्रम के कारण इस समय दो लाख पौण्ड से अधिक लागत का होगया है।

संसार के सारे ऐक्टरों में सिर्फ चार्ली ही ऐसा व्यक्ति है, जिसने अपना स्टुडिओ बनाया। कुछ बड़ी बड़ी फ़िल्म कम्पनियों को उसका यह ढंग देखकर बहुत ईर्ष्या हुई। बाद में उसने मैरी पिकफोर्ड, डगलस फेयरबैंक्स, डी० डब्ल्यू० ग्रिफ़िथ इत्यादि को भी अपने साथ मिलाकर 'United Artists' Corporation'-नामक कम्पनी बना ली। इस संस्था में कितने ही ऊँचे ऊँचे दर्जे के एक्टर काम करते थे, और उनका लक्ष्य, एक्टरों को फ़िल्म-व्यापार में स्वतन्त्रता दिलाना था। चार्ली इस उद्देश्य पूर्ति के लिये सदा पूरा परिश्रम करता रहता था।

इस संस्था को अपने काम में शुरू से ही सफलता मिली। अपने काम में पूरी आजादी होने के कारण उसे अपने चित्रपटों को अच्छा बनाने में अधिक सुविधा रहती थी। सन् १९१८ ई० में तथा इससे आगे उसने जितने चित्रपट तैयार किये, वह पहिल की अपेक्षा कहीं अच्छे थे। सरकस, दि किड, आर स्वर्ण वर्षा आदि लम्बे चित्रपटो मे चैप्लिन न जनता को केवल हास्य रस का कमाल ही नहीं दिखाया, वरन् कला और स्वाभाविकता की दृष्टि से भी यह खेल बहुत अधिक ऊँचे दर्जे के हैं। उसके काम में हास्य को सब से ऊँचा दर्जा दिया जा सकता है। उसने अपन कामों से दिखा दिया है, कि दुःख में भी मनुष्य किस प्रकार प्रसन्न रह सकता है।

जर्मन युद्ध समाप्त होगया था। अँग्रेजी सिपाहियों का एक जत्था समुद्र के दक्षिणी तट पर ठहरा हुआ था। नगर में उन दिनों किसी कारण से हड़ताल थी। लोग चारों ओर नारे लगाते फिरते थे। फौज के उन सिपाहियों ने, जो हड़तालियों से सहानुभूति रखते थे, अपने अफसरों की आज्ञा मानने मे इन्कार कर दिया। उनका अफ़सर एक कृपालु आदमी था। उसन उन्हें उस दिन की छुट्टी दे दी, और सब को उस नगर मे बाइस्कोप देखने चलने की दावत दी। सिपाही उसके इस कार्य मे बडे प्रसन्न हुए। उन्होंने सिनेमा में जाकर Shoulder Arms में चार्ली का मजा-

क्रिया काम देता। उस खेल में उन्हीं की भाँति वह भी युद्ध के कष्टों से थका हुआ दिखाई देता था, परन्तु फिर भी वह अपना काम प्रसन्नता से कर रहा था। आज उन्हें पहली दफ़ा यह मालूम हुआ, कि युद्ध और भयानक रक्त-पात के समय भी जीवन में कुछ सुख प्राप्त हो सकता है। खेल समाप्त होजाने पर सारे सिपाही अपनी थकावट भूल गये, और हँसते हुए अपनी बैरकों में चले गये

चैप्लिन के स्टुडिओ ने पहले A dog's life, Shoulder Arms, Pay day, The Pilgrim, The Immigrant, आदि चित्रपट निकाले थे। ये सारे चित्रपट उसके पहले खेलों से कहीं ऊँचे हैं, और उनमें किये गये काम पहले से कहीं उत्तम हैं। इन खेलों में चार्ली के अपने काम भी पहले की अपेक्षा अधिक प्रशंसनीय हैं।

उनमे से सर्व-श्रेष्ठ खेल The Pilgrim है। यह खेल सन् १९१८ ई० में तैयार हुआ था। इसमें चार्ली उस चोर का काम करता है, जो किसी तरह जेलखाने से निकल भागा है। वह अभी तक जेल के कपडे पहने हुए है, और उन्हें बदलने की चिन्ता कर रहा है। चलते चलते वह एक नदी के किनारे पहुँचता है।। वहाँ एक पादरी अपने कपडे किनारे रखकर नहा रहा था। वह उन्हें उठाकर जल्दी-से पहन लेता है, और जल्दी जल्दी सडक पर चल देता है। कुछ दूर जाने पर उसे एक अधेड स्त्री और पुरुष मिलते हैं,

चार्ली चैप्लिन

चार्ली चैप्लिन अपने 'पिल्ग्रिम'-नामक फिल्म में।

वे उसे पादरी समझकर अपना विवाह कराने को कहते हैं। चार्ली किसी तरह उनसे पीछा छुड़ाकर चला जाता है। आगे चल कर उस पर और भी अधिक मुसीबत आई। उस नगर में उसी दिन एक बहुत बडा पादरी उनके गिरजे में उपदेश देने आनेवाला था। उस नगर के निवासियों ने चार्ली को देखकर आनेवाला पादरी समझा। उसने बचने का बहुतेरा यत्न किया, परन्तु उसे स्टेज पर जाना ही पडा।

चार्ली ने वहाँ की सजावट को देखकर समझ लिया कि आज कोई विशेष उत्सव है, और उसी के अनुसार उसने उपदेश देना प्रारम्भ किया। उसका उपदेश सुनकर कुछ लोगों को आश्चर्य होता था, कुछ भयभीत जान पडते थे, परन्तु वृद्ध मनुष्यों को बडा आनन्द आता था। चार्ली उस समय बाइबिल में लिखी हुई—'डेविड और गोलियथ' की लड़ाई का हाल सुना रहा था। यह चार्ली के मूक एक्टिंग का सर्व-श्रेष्ठ अभिनय था। उसकी प्रत्येक भाव-भंगी इतनी स्पष्ट है कि देखनेवाले बिना सुने ही सब बातें स्पष्ट समझ जाते हैं।

चार्ली चैप्लिन ने 'पिलग्रिम' से एक साल पहले एक खेल निकाला था जिसका नाम The Kid था। यह उसके सब चित्रपटों से बड़ा और अच्छा था। इस खेल के चैप्लिन की नाट्य-कला की चतुरता का बड़ा अच्छा प्रमाण मिलता है। यह खेल उसके सब खेलों से अच्छा माना जाता है। इस

चित्रपट में 'जैकी कूगन'-द्वारा किया गया 'किड' का कार्य सराहनीय है। जैकी को The Kid मे काम किये हुए दस वर्ष हो गये हैं। इतने दिन विश्राम करने से बाद अब वह फिर एक्टिंग करने को उद्यत हुआ है। इस समय वह मार्क ट्वेन्स के लिखे हुए 'Tom Sawyer' में पहले से भी अधिक उत्तम कार्य कर रहा है। उसे वहाँ बहुत ऊँचा वेतन मिल रहा है, और वह इस समय हॉलीवुड का एक श्रेष्ठ एक्टर माना जाता है।

चार्ली ने जैकी को इस काम के लिये पसन्द करने में बुद्धिमानी का काम किया, और बालक ने भी उसे उसकी आशा से कहीं अधिक कर दिखाया।

इस खेल के समाप्त हो जाने के बाद चार्ली दूसरा खेल शुरू करनेवाला था कि लण्डन से उसे तार मिला। उसमें लिखा था कि 'The Kid' लण्डन में पहिली बार शुरू होने वाला है। तार मे खेल की बड़ी प्रशंसा की गई थी। इस लिये चार्ली ने स्वदेश जाने का यह अच्छा अवसर समझा।

इधर चार्ली कुछ दिनों से अस्वस्थता का अनुभव कर रहा था। वह लगातार सात साल से नौकरी में रहते हुए, जनता को अपने कामों से प्रसन्न करने और धन बटोरने के चक्कर में पड़ा हुआ था। कामकी अधिकता और स्टुडिओ की दिन-चर्या से तंग आगया था, इसलिये उसे अब कुछ विश्राम की आवश्यकता थी।

अस्तु, उसे लण्डन जाने की विशेष इच्छा होने लगी। उसने अपने प्रति जनता का प्रत्यक्ष उत्साह कभी नहीं देखा था। उसने धन कमाया था, अखबारों ने उसकी ख्याति देवताओं के समान दूर-दूर फैला दी थी, हजारों आदमियों ने उसे पत्र लिखे थे, और संसार के बड़े-बड़े आदमियों ने उसके प्रति अपनी सहानुभूति दिखाई थी, परन्तु उसने अपने किसी चित्रपट का पहला खेल कभी स्वयं नहीं देखा था। इसलिये उसे यह देखने की बड़ी उत्कण्ठा थी कि लण्डन की जनता उसके चित्रपटों का कैसा स्वागत करती है। उसे यह देखने की सदा इच्छा रहती थी कि वे मनुष्य, जिनमें उसका बाल्य-काल बीता है, उसका किस प्रकार स्वागत करते हैं। कई लोगों ने उसे विश्वास दिलाया था कि लण्डन निवासी उसका बड़ा मान करेंगे। परन्तु उसे इसमें सन्देह था। कारण कि अब लण्डन में पहले की अपेक्षा बहुत परिवर्तन होगया था। ऐसी हालत में वहाँ के निवासी चिर काल से बाहर रहे हुए चैप्लिन को किसी तरह पहचान सकेंगे—उसे यही चिन्ता थी।

परन्तु फिर भी उसने लण्डन जाने का निश्चय कर लिया। उसने अपने दूसरे खेल की तैयारी स्थगित करदी और दूसरे दिन यूरोप के लिये रवाना होगया।

'चिकागो' और 'न्यूयार्क' में भी उसका अच्छा स्वागत हुआ। अखबारों के रिपोर्टर उसे अपने प्रश्नों से तंग कर

जानते थे। उसके स्वागत करने में सब को आनन्द आता था। लोगों ने उसे भोज आदि देकर उसका सत्कार किया। उसका सारा समय हजारों आदमियों के साथ हँसी दिल्लगी में ही बीतता था।

थके हुए मनुष्य को कोलाहल और भीड़ से कष्ट मिलता है, परन्तु यदि चैप्लिन को यह दृश्य देखने का अवसर न मिलता तो उसका समय बड़े कष्ट से बीतता।

इग्लैण्ड आने पर भी यही हाल हुआ। रिपोर्टरों ने उस पर अपने प्रश्नों की बौछार प्रारम्भ कर दी। यह कार्य समाप्त होजाने पर 'साउदम्पटन' के मेयर की बारी आई। उसने उसे 'मानपत्र' पढ़कर सुनाया। फिर इसके पुराने मित्रों ने उससे हाथ मिलाना शुरू किया और बच्चे उसके चारों ओर एकत्र होगये। उसे तरह-तरह के उपहार दिये गये। चार्ली लज्जित होगया, परन्तु उसे इन बातों में आनन्द आता था। हाँ, उसे यह देखकर अवश्य दुःख हुआ कि जनता अधिक संख्या में उपस्थित न थी। परन्तु 'वाटलू' पहुँचकर उसका यह भ्रम दूर होगया। वहाँ उसका ऐसा स्वागत हुआ, जिसकी उसे आशा भी न थी। वह अपनी Wonderful Visit नामक पुस्तक में लिखता है कि लोग उसकी मोटर तक पहुँचने के लिये आपस में लड़ाई-झगड़े करते थे।

लोगों ने बाढ़ तोड़ डाली। वे चारों ओर से इकट्ठे

होकर उसकी गाडी तक पहुँचने का यत्न करने लगे। पुलिस-धक्के दे-दे कर उन्हें हटाती थी। लडकियाँ चार्ली-चार्ली चिल्लाती थीं। बच्चे, जवान और बूढे सभी उत्साहित थे। चारों ओर एक अजीब हलचल थी और वह अपनी गाडी में बैठा हुआ उसका आनन्द ले रहा था। कितना सुन्दर था वह दृश्य!

उस का समय बडे आनन्द से बीत रहा था। स्त्रियाँ उसे अपने भोज और नाचों में निमन्त्रण करती थीं। थियेटर के वे प्रतिवादी, जो वहाँ जाना भी लज्जास्पद समझते थे, वहाँ जाकर चैप्लिन से मिलने के बाद उसकी प्रशंसा करते थे।

जनता के उत्साह का पता उन ७३००० पत्रों से लगता था जो उसे पहले तीन दिनों में मिले थे और जिनमें से २८००० पत्र केवल निमन्त्रण के थे।

फिर 'The Kid' शुरू हुआ। सारे शहर में हलचल मच गई। बडे बडे नेताओं ने उसकी कला की प्रशंसा की, जनता ताली बजाती थी और चार्ली उसे सुनकर गद्गद होजाता था।

वहाँ से वह पेरिस गया। वहाँ की जनता ने भी उसका 'लण्डन' के समान ही स्वागत किया। यहाँ भी रिपोर्टरों ने उसे आ घेरा। वे अँग्रेजी नहीं जानते थे। परन्तु फिर भी नाना प्रकार के प्रश्न करते थे। और चार्ली

फ्रेंच न जानने के कारण इशारों से उन्हें कुछ-कुछ समझाने का यत्न करता था। जर्मनी जाकर वह "The Kid" देखने फिर पेरिस वापस आगया। अबकी चार्ली को वहाँ की स्थिति देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। पेरिस में आज छुट्टी मनाई जा रही थी। तमाशों से हुई सारी आय फ्रांस के दरिद्रों की सहायतार्थ दे दी गई। नगर के बड़े बड़े आदमी 'ट्रोकैडिरो' थियेटर में एकत्र हुए थे। जो लोग अन्दर नहीं जाने पाते थे, वे सड़क और थियेटर के चारों ओर इकट्ठे हो गये। इसलिये चार्ली चैप्लिन को बड़ी मुसीबत से पीछे के रास्ते से ले जाया गया। वहाँ आने पर सब से पहले उसका परिचय पेरिस में रहनेवाले अमरीकन राज-दूत से कराया गया। और इसके बाद वह अपने स्थान पर गया, जहाँ फ्रांस की 'पार्लियामेन्ट' के मन्त्री ने उसका स्वागत किया। उसके स्थान पर अँग्रेज़ी और अमरीकन झण्डे लहरा रहे थे। अँग्रेज, अमरीकन और फ्रांस के सैकड़ों गण्य-मान्य व्यक्ति उसके पास मौजूद थे, परन्तु उसके पास उनका सत्कार करने के लिये ज़रूरत से अधिक समय न था। क्योंकि बड़े-बड़े अफसर उसे कार्य-क्रम बताने के लिये परेशान कर रहे थे। कुछ देर वह इस काम में लगा रहा। उसके हस्ताक्षर किये हुए कार्य-क्रम सौ सौ फ्राक्स के बिके। उसके बाद उसकी तस्वीरें खींची गयीं। उस समय उसकी दशा बड़ी विचित्र थी। सहस्रों

मनुष्यों की आँखें और मानसिक शक्तियाँ उस पर अपना असर डाल रही थीं। उसे अपना यह सत्कार देखकर बड़ा आनन्द आया, परन्तु वह भीड़ के कारण "The Kid" खेल को अच्छी तरह न देख सका। खेल समाप्त होने पर उसे मन्त्री ने अपने स्थान पर आने का कहलाया, क्योंकि लोगों की इच्छा थी कि उसे उपहार दिये जायँ। यह समाचार सुनकर चार्ली बहुत घबराया। वह कुछ भी न सोच सका और वध्य पशु के समान चुपचाप अपने स्थान पर चला गया। कुछ उपहार देने के बाद मन्त्री ने एक छोटा-सा व्याख्यान दिया, जिसका अनुवाद चार्ली के समझाने के लिये अंग्रेज़ी में कर दिया। उसका मस्तिष्क इस समय जड़ होगया था। इसलिये सोचने पर भी वह उत्तर देने के लिये उचित शब्द न ढूँढ सका। जब व्याख्यान समाप्त होगया, उस समय उसने केवल 'Merci' कहा और उसके विचारानुसार यह शब्द पर्याप्त था। फिर जनता की ओर से कई व्याख्यान हुए। थियेटर से जाते समय जनता ने बहुत बड़ा जलूस निकाला और वृद्ध मनुष्यों ने उसका चुम्बन किया।

आज चार्ली ने अपनी ख्याति का प्रत्यक्ष दृश्य देख लिया।

"The Kid" की सफलता में जितने उपहार मिले थे, उनमें से एक छोटा सा पत्र भी था जो एक 'रूसी' लड़की की ओर से लिखा गया था। उसमें लिखा था—

"मैंने तस्वीर देखी। तुम एक बड़े आदमी हो। मुझे बड़ी-प्रसन्नता हुई। ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रक्खे इत्यादि।

भवदीया—

स्त्र्या।"

× × × ×

सन् १९२३ ई० में चैप्लिन ने 'A Woman in Paris' नामक चित्रपट तैयार किया जो विशेष ध्यान देन योग्य था। इस खेल में उसने कोई पार्ट नहीं किया। 'इडना पुर्वियन्स' इस खेल की नायिका थी और 'मैन्जो' मुख्य नायक था। 'मैन्जो' ने पहिली बार इस चित्रपट में एक्ट किया था, परन्तु उसने अपना कार्य इतनी योग्यता से किया कि चार्ली के कई मित्रों ने उसकी प्रशसा की। चार्ली ने स्वय इस खेल को लिखा था। यह खेल 'ला बोहेम' और 'कै मेलियास' की रानी की कथा के आधार पर तैयार किया गया था।

एकबार 'A Woman of Paris' खेल शुरू होनेवाला था। चार्ली ने इस बार इस खेल को सर्वोत्तम बनाने की इच्छा से कोई अच्छा विषय सोचना शुरू किया। अकस्मात् उसके मस्तिष्क में प्राचीन काल में सोने को ढूँढन के लिए 'एलास्का' और बर्फ से ढके हुए 'क्लोन्डिक' पहाड़ों में जा कर तरह-तरह की मुसीबतें उठानेवाले लोगों की कहानी याद आगई। परन्तु यह विचार जितना सुन्दर था उतना

चार्ली चैप्लिन अपने 'पे डे' नामक चित्रपट में।

ही कठिन भी था। क्योंकि उसका चित्रपट तैयार करना किसी हद में असम्भव कहा जा सकता है। अच्छी तरह सोचने के बाद उसने अपनी कम्पनी 'कैलिफोर्निया' के ऊँचे पर्वतों पर जाने का निश्चय कर लिया। इस कार्य में आनेवाले खर्च और कष्टों का ध्यान बड़े-बड़े उत्साही और मेहनती आदमियों को भी विचलित कर सकता था, परन्तु चैप्लिन ने सब-कुछ जानते हुए भी वहाँ जाना निश्चित कर लिया। उसे किसी खास चीज की इच्छा थी और उसे प्राप्त करना वह अपना कर्तव्य समझता था।

इन पहाड़ों के फ़ोटो लेने में १०००० पौंड खर्च हुए थे। परन्तु फ़ोटो लेने से पहले ही उन्हें और कई काम करने पड़े थे। उन्हें निश्चित स्थान पर पहुँचने के लिए एक हजार फ़ुट ऊँचे बर्फ़ मे दो हजार तीन सौ फ़ुट लम्बा रास्ता बनाना पड़ा था। और इन सब कामों में उसे दो लाख पौंड खर्च करने पडे थे।

जिस समय यह चित्रपट बनकर जनता के सामने आया, उस समय बड़े बड़े समालोचकों ने भी उसकी प्रशंसा करते हुए उस पर आये हुए व्यय को सार्थक बताया। चैप्लिन जो स्वयं अपने काम का सबसे बड़ा समालोचक है, अपने इस काम को देखकर पूर्ण संतुष्ट हुआ। जब लोगों उसके विचार पूछे, उस समय उसने कहा कि मेरे सारे कामों में से केवल यही काम है, जो मुझे सदा याद रहेगा।

और बड़े-बड़े समालोचकों की भी यही धारणा थी। अमरीका का एक बड़ा समालोचक लिखता है कि चैप्लिन ने यह चित्रपट तैयार करके फिल्म-क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। दूसरा इसे चैप्लिन की सबसे बड़ी यात्रा लिखता है। और तीसरा इस सुन्दरता का चन्द्र बताता है। इसी प्रकार अन्य लोगों ने भी तरह-तरह से उसकी प्रशंसा की है।

बर्फ से ढके हुए पर्वतों को काट काट कर आगे बढ़ते समय लोगों पर आये हुए असह्य कष्ट, अनेक मनुष्यों की शोचनीय मृत्यु और कठिनाई के रोमांचकारी दृश्यों को देखकर जनता सन्नाटे में आ गई।

परन्तु जहाँ इन पहाड़ों के दुखदाई दृश्यों को देखकर जनता कष्ट से आँसू बहाती है, वहाँ इस में दिखाये हुए मजाकिया कामों को देखकर हँसते हँसते लोट-पोट भी हो जाती है। एक स्थान पर भूख से तंग आकर सबने उस समय जूते खाना ही निश्चय किया। जूते छाँटने के लिये उन्हों ने चिट्ठियाँ डालीं। जिसमें दुर्भाग्य वश चार्ली का नाम निकल आया। और चमक प्रसिद्ध जूते भोजन के लिये रख दिये गये। उन महा प्रसिद्ध ऐक्टरों का पके हुए चमड़े को चाव से खाने का दृश्य देखकर लोगों की आखों में आँसू आजाते थे। इस दृश्य में चार्ली के हिस्से में जूतों का तला आया था। उस का तले से निकालकर उसे

अजीब तरह से खान का दृश्य देखकर जनता हँसने लगती थी।

परन्तु यह खेल उसके सारे खेलों से भिन्न था। इसमे बनावटी मज़ाक़ का नाम भी न था।

"The Gold Rush" चौदह महीनों के बाद १९२५ मे पूरा हुआ था।

"The Circus" १९२७ ई० में रजिस्टर्ड कराया गया था। और इसमें प्राचीन काल का मजाक़िया ड्रामा दिखाया गया था।

चार्ली चैप्लिन को इस खेल की सफलता मे बडी कठिनाई उठानी पडी। "The Circus" को असली सरकस से मिलाने के लिये उसे एक साल से अधिक समय तक शेर, चीता, भेडिये, हाथी इत्यादि पशु और उनसे काम लेनवाले मनुष्य रखने पडे थे। जिनकी सख्या लगभग दो हज़ार थी और क्वल इनके खाने का खर्च साठ हज़ार पौण्ड हुआ था। तस्वीर खींचने का एक खास स्थान बनाया गया था। और इस खेल की मुख्य नायिका "मेरिना कैनेडी" लगातार तीन महीने तक घोडे की नगी पीठ पर चढने का अभ्यास करती रही। और चैप्लिन स्वय भी रस्सी पर चलना सीखता रहा।

चित्रपट समाप्त होनेवाला था कि अचानक भयकर आग लगी और फ़िल्म तथा सब सामान जल कर भस्म

होगया। एक बडे नुक़सान के बाद चैप्लिन को फिर दुबारा यह कार्य प्रारम्भ करना पडा और इस कारण यह चित्रपट नियत समय से बहुत दिन बाद तैयार हुआ।

"The Circus" में चैप्लिन बेरोज़गारी की हालत में दिखाया गया है। वह नौकरी ढूँढने जाता है परन्तु असफलता मिलने पर लाचार होकर जेब कतरों में मिल जाता है। उसके रहन सहन से उस पर पुलिस को सन्देह होगया और खुफिया पुलिस ने उसका पीछा किया। चार्ली ने पास में ठहरे हुए सरकस में जाकर शरण ली। पहले मालिक को उस पर सन्देह हुआ, परन्तु उसके दूर हो जाने पर उसे वहाँ नौकरी मिल गई। परन्तु उसके आलस्य और बेडौल शरीर से खिन्न होकर मालिक ने उसे पृथक् कर दिया। परन्तु उसका भाग्य अच्छा था। अचानक सरकस में हडताल होगई। इसलिये चार्ली को वहाँ फिर नौकरी करने का अवसर मिलगया। धीरे धीरे वह मालिक की लडकी से प्रेम करने लगा, परन्तु वह अपना यह भाव किसी कारण से उसे न बता सका। उसी कम्पनी में एक बडा सुन्दर मनुष्य आया। लडकी को चार्ली के प्रेम का कुछ भी पता न था, इसलिये वह धीरे धीरे इस नवागन्तुक की ओर अनुरक्त होने लगी। चार्ली अब अपना काम इतनी उत्तमता से करता था कि सदा उसी की माँग होती रहती थी और इस कारण उसका मालिक उससे बड़ा प्रसन्न रहता था।

एक बार रस्सी पर चलने के लिये कम्पनी को एक आदमी की जरूरत हुई। उस कम्पनी के कितने ही आदमियों ने उस पर चलने का यत्न किया, परन्तु चार्ली के सिवा कोई न चल सका। अब तो वहाँ चार्ली की बड़ी प्रतिष्ठा होने लगी, परन्तु चार्ली को इसका कारण पता न लग सका। लड़की ने उसे यह बात बता दी। और चार्ली को अब मालिक से अधिक वेतन माँगने का अवसर मिल गया। मालिक को अपनी लडकीके इस व्यवहार से बडा क्रोध उत्पन्न हुआ। वह उसे मारने के लिये उद्यत हुआ, परन्तु चार्ली ने उसके पक्ष मे बोलकर उसे बचा लिया। परन्तु इसके बदले में उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पडा।

चार्ली को फिर एक अवसर हाथ आया। वह एक दिन घूम रहा था। इसी समय उसने सरकस के मालिक की लडकी को वहाँ फिरते देखा। उसके पूछने पर लडकी ने बताया कि वह अपने पिता के व्यव्हार से तंग आकर घर से निकल आई है। चार्ली उसे सान्त्वना देकर अपने-साथ सरकस में ले आया और किसी प्रकार उसी समय एक सुन्दर युवक से उसका विवाह करा दिया। विवाह के बाद वे तीनों फिर मालिक के पास गये। मालिक ने उनका अपराध क्षमा कर दिया और दोनों को फिर अपनी कम्पनी में नौकरी करने के लिये कहा। उसकी लड़की ने चार्ली को भी रखने की प्रार्थना की। और इस प्रकार

पुन नौकरी मिल गई। सरकस कुछ दिन बाद चला गया और चार्ली अकेला रहकर भविष्य की चिन्ता करने लगा।

चार्ली के और खेलों की तरह यह खेल सुखान्त नहीं है। इस समय भी चार्ली वहीं है, परन्तु उस समय की प्रसन्नता और हँसी-मजाक के स्थान में इस समय निराश और दु खों से थके हुए मनुष्य की भाँति इधर उधर फिरते देखते हैं।

इस चित्रपट पर भी चार्ली का बहुत धन खर्च हुआ। उसने जनता को चित्रपट के नवीन आविष्कारों से प्रसन्न करने मे कोई बात उठा नहीं रखी। "The Gold Rush" की भाँति इस खेल से भी सबको अपने कामों के चकित कर दिया।

"The Circus" में सब कहीं बड़ी सफलता मिली। उसमें कितने ही मजाकिया कार्य दिखाये गये थे, इसलिये उसे देखकर जनता सदा प्रसन्न होती थी।

"City lights' को तैयार होने में तीन साल लगने के बाद मार्च १९३१ मे तैयार हो कर पहली बार 'लोसएंजेलिस '·न्यूयार्क' और 'लन्दन' में पहिली बार दिखाया गया।

तीन साल के फ़िल्म इतिहास में यह चित्रपट सब से अधिक महत्व रखता है। लोस एंजेलिस' में इस चित्र को देखकर जनता हर्ष से नाच उठी थी। औरतें कुचल गई थीं, लोगों के सिर फूट गये और थियेटर से लेकर बार-

सौ गज़ तक मनुष्यों की भीड़ दिखाई देती थी। बारह बजे खेल समाप्त होजाने पर भी बीस-पचीस हजार मनुष्य वहाँ शोर-गुल मचाते रहे थे।

लन्दन मे भी "City lights" के समय यही हाल हुआ था। सैंकड़ों आदमी केवल चार्ली की शक्ल देखने की इच्छा से ही आये थे। और थियेटर के बाहर हजारों मनुष्य पानी में भीगते हुए भी शान्ति के साथ खड़े रहे। लन्दन में उस समय तक आनेवाले किसी महा योद्धा का भी उतना स्वागत न हुआ था, जितना थियेटर में आने पर चार्ली चैप्लिन का हुआ।

'लन्दन' और 'लास ऍंजेलिस'की जनताने इस चित्रपट की ओर विशेष सहानुभूति दिखाई। सम्भव है कि किन्हीं-किन्हीं समालोचकों का यह कहना कि "City-light" "गोल्ड रश" और "सरकस" जितना सुन्दर नहीं है, सत्य हो। सम्भव है कि उस के किसी किसी भाग में कुछ रूखापन आगया हो, परन्तु जनता ऐसी बातों की चिन्ता नहीं करती, क्योंकि जनता चार्ली के प्रत्येक काम की ओर उतना ध्यान नहीं देती है, जितना उसकी ओर। जनता के लिये उसका नाम उसके काम के छोटे छोटे ऐबों को छिपाने के लिये पर्याप्त है। वह उसक खेलों की ओर सहानुभूति रखते रखते उसके नाम को प्रेम करने लगी है, जो उसकी ख्याति से अधिक बढ़कर है।

"City-lights" में चार्ली एक अंधी फूल बेचनेवाली लड़की से मिलता है और उसकी दशा पर उसे तरस आता है। उसी दिन शाम को वह एक शराबी से मिलता है, जो शराब के अधिक सेवन से धीरे धीरे अपना नाश कर रहा है।

रईस शराबी चार्ली को अपने यहाँ दावत देता है। बाद मे चार्ली की उस रईस से मित्रता हो जाती है। अपने उस मित्र से दुबारा मिलन के बाद चार्ली को पता लग जाता है कि इससे उसका कुछ लाभ न होगा। इस लिए वह ईमानदारी और मेहनत से पैसा कमाने का विचार करता है।

वह सडक साफ करने की नौकरी करलेता है। वह काम की चिंता न कर अपना अधिक समय उसी अँधी लडकी के साथ बिताता है। इसलिये उसकी नौकरी छूट जाती है। उसकी प्रेमपात्री बहुत ही निर्धन है,इसलिए चार्ली उसकी सहायता करने की इच्छा से एक बॉक्सिग मैनेजर क पास जाकर बॉक्सिग करने की इच्छा करता है। एक बड़ा मजाकिया बॉक्सिग-मैच होता है। अखाडे में चार्ली के पैतरे देखकर लोगों को हँसी आती हैं, परन्तु घूँसा लग जाने से चार्ली की हार होती है।

वह फिर उसी रईस से मिलता है, जो नशे की हालत में अन्धी लडकी की आँखों के इलाज के लिये उसे बहुत

चार्ली चैप्लिन अपने 'सिटी लाइटस नामक चित्रपट में।

सा रुपया देता है। परन्तु नशा दूर हो जाने पर वह उस पर चोरी का अभियोग लगाता है। चार्ली गिरफ्तारी से पहले ही किसी प्रकार वह धन अन्धी लड़की को दे देता है। उसे सज़ा हो जाती है, और चोर-डाकू की तरह उसे जेल जाना पड़ता है। चार्ली के जेल चले जाने के बाद लड़की ने अपनी आँखों की चिकित्सा करा ली, और हर प्रकार से सुखी जीवन व्यतीत करने लगी। परन्तु उसे अपने उस प्रेमी को देखने की सदा इच्छा रहती थी, जिसने उसके साथ इतना उपकार किया था। चार्ली जेल से छूटकर लड़की के पास आकर उसकी ओर दीनता से देखता है। लड़की उसे न पहचानकर लापरवाही से हँसती है, परन्तु उसकी आवाज़ सुनकर उसे सन्देह होता है। बाद में उनका परिचय होता है, और वे दोनों बड़ी देर तक एक-दूसरे की ओर देखते हैं।

समालोचकों ने इसकी आलोचना करते हुए कहा है कि इस चित्रपट में कहीं कहीं कुछ रूखापन आगया है। दूसरे यह उसके और चित्रपटों के समान हास्यमय भी नहीं है। उसके किसी-किसी काम को देखते हुए तो उसे कुछ भी विशेषता नहीं दी जा सकती। परन्तु साथ में वे यह भी मानते हैं कि उसकी ये बुराइयाँ सूर्य के प्रकाश में दीपक के समान हैं। वे इसमें दिखाये हुए मजाक़ को अच्छा समझते हैं, और खासकर चैप्लिन के काम की तो बहुत

ही प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं कि यद्यपि "City Lights" "Gold Rush" के समान उत्तम नहीं है, परन्तु उसके आद्यन्त को देखकर यह कहा जा सकता है कि गत वर्ष में बने हुए सारे चित्रपटों की अपेक्षा यह अधिक उत्तम है। इस विषय मे अधिक न लिखकर केवल यह बता देना पर्याप्त होगा कि यह खेल चैप्लिन के पिछले खेलों से सर्वथा भिन्न है, और इसमें किया हुआ चैप्लिन का अपना काम उसके दूसरे कामों के समान ही बेजोड़ है।

"CityLights" की "Gold Rush" और "The Circus" से तुलना करते हुए समालोचकों ने लिखा है कि इस खेल में चार्ली चैप्लिन एक ऐसी कसौटी पर पूरा उतारा है,जिस पर बड़े बड़े दिग्गज कलाकार भी फेल हो जाते हैं। वास्तव में मनुष्य की प्रतिभा के लिए किसी निश्चित धरातल का कल्पना करना बड़ा कठिन है। किसी समय प्रतिभा का विकास यदि चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तो किसी समय वह इस प्रकार कुण्ठित हो जाती है, कि देखकर आश्चर्य होता है। अतएव यदि चार्ली की प्रतिभा की धारा किसी वस्तु मे बदल जाती है, तो हमें उसकी शिकायत नहीं करनी चाहिए।

नवम परिच्छेद

चार्ली यथा-शक्ति अपने सम्बन्धियों की सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटता। उसके बचपन के साथियों में से शायद ही कोई ऐसा होगा, जिसकी उसने सहायता न की हो। कुछ को उसने अपने स्टूडिओ में काम पर लगा लिया था, और उन्हीं में से एक व्यक्ति 'एल्फ़र्ड रीव्ज़' थे, जो पहले कार्नो कम्पनी में मैनेजर का काम करते थे। अपना स्टूडिओ खोलने पर चार्ली ने उन्हें कैलिफ़ोर्निया में बुलाकर अपने कार बार का मैनेजर बना लिया। रीव्ज़ इस पद पर बहुत दिनों तक रहे, और अब भी वह चार्ली के विशेष प्रेमियों में से हैं।

डगलस फ़ेयरबैंक्स चार्ली से अपनी पहली भेंट की एक विचित्र कथा बताते हुए कहता है कि उसका पहला चित्रपट लॉस ऐंजिल्स में दिखाया जा रहा था। एक दिन प्रात काल एक एक्टर खड़ा हुआ दीवार पर लगे हुए इश्तहारी चित्रों की ओर देख रहा था। उसी समय एक और युवक आया, और उन्हे देखने लगा।

"क्या आप इसे पसन्द करते हैं?" युवक ने पूछा।

"यह सब से अच्छा चित्र है।" एक्टर ने स्थिर स्वर से कहा।

"और क्या यह मजाकिया भी है?" युवक ने फिर पूछा।

"बेहद मजाकिया।" एक्टर ने उसी तरह से कहा।

युवक ने आगे आकर जोर से कहा—"मेरा नाम चैप्लिन है।"

"हाँ, मैं जानता हूँ," दूसरे ने हँसते हुए उत्तर दिया—"और मेरा नाम डगलस फ़ेयरबैंक्स है।"

दोनों ने हाथ मिलाये, और उसी दिन से उनमें बड़ी मित्रता होगई।

चैप्लिन अपनी "My Wonderful Visit" में लिखता है कि डगलस और मैरी-जैसे मित्र मिलना मेरे लिये सौभाग्य की बात है।

यद्यपि चार्ली चैप्लिन को भोज, नाच या इसी प्रकार के अन्य उत्सवों से प्रेम न था, परन्तु फिर भी उसके नम्रता आदि गुणों के कारण उसके सहस्रों मित्र बन गये थे। अपने स्टूडिओ के साथियों के साथ उसका बड़ा अच्छा व्यवहार रहता था, और इसलिए वे सदा उसकी प्रशंसा करते रहते थे। कवि, चित्रकार, लेखक, गवैये और डॉक्टर-आदि सभी उसके मित्र थे।

यद्यपि उसकी प्रारम्भिक ख्याति योरोप से ही शुरू हुई थी, परन्तु उसके मित्रों की अधिक सख्या अमरीकन ही थी,

क्योंकि उसने अपने कार्य का क्षेत्र प्रधानतया अमरीका को ही बनाया था।

एक दफा इँग्लैण्ड की एक सुन्दर लेखिका उससे 'हॉलीवुड' में मिलने आई, और कुछ बातें करने के बाद उसने खिन्न होकर चैप्लिन से कहा—

"मैंने सोचा था कि तुम बहुत मज़ाक़िया होगे, परन्तु मेरा यह विचार मिथ्या निकला।"

"तुम भी वैसी ही निकलीं," उसने भी विरक्त होकर उत्तर दिया।

चार्ली उन मनुष्यों से घृणा करता है, जो उनसे सदा ज्याक़ की आशा रखते हैं।

सन् १९२१ ई० तक चार्ली के अँग्रेज मित्र बहुत कम थे। परन्तु १९२१ में इँग्लैण्ड जाने पर उसके सैकड़ों रिश्ते-दार निकल आये, जिन्हें वह जानता तक न था।

इँग्लैण्ड आकर उसे अपनी डाक देखकर मालूम हुआ कि उसके ऐसे ६७१ सगे-सम्बन्धी हैं, जिन्हें अब तक उसने देखा भी न था। उनमें से अधिक संख्या उसके चचेरे भाइयों की थी, और उन्होंने पूरी व्याख्या देकर अपना सम्बन्ध साबित करने का यत्न किया था। वह सभी उससे किसी रोज़गार या एस्टरी की आशा करते थे। नौ स्त्रियाँ उसे अपना पुत्र बताती थीं। उन्होंने उसे लिखा था कि जब वह बच्चा था, तभी उसे 'जिप्सियों' ने चुरा लिया था, इसी-

लिये अब तक उसका पता न लग सका। परन्तु उसे इस बात का विश्वास न हो सका, क्योंकि उसने अपनी माता को स्वयम् जीवित देखा था।

चैप्लिन की इच्छा कुछ प्रतिष्ठित अँग्रेजों से मिलने की थी। इसलिये उसके सेक्रेटरी मिस्टर नोब्लाक ने उसका परिचय मिस्टर ई० वी० लूकस से कराया। उस दिन सायं काल को चैप्लिन ने 'गैरिक क्लब' में होनेवाले एक भोज में जाने का निश्चय किया। वहाँ उस दिन और बहुत-से प्रतिष्ठित सज्जनों के अलावा सर जेम्स बैरी भी आनेवाले थे, जिनसे मिलने की उसे विशेष इच्छा थी।

उस भोज में 'रस्वायर बैंक्रॉफ्ट' भी शामिल हुए थे, जो सिनेमा के बड़े भारी विरोधी थे। इसलिए चार्ली को उनके सामने बैठकर बड़ा सकोच हुआ। वह 'बैरी' से इस विषय में कुछ कहनेवाला ही था कि 'बैंक्रॉफ्ट' ने वर्फ तोडते हुए कहा—"कल मैं सिनेमा देखने गया था, और वहाँ मुझे 'Shoulder Arms' बहुत पसंद आया।"

चार्ली का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा, और उसने अस्पष्ट स्वर में इसका कुछ उत्तर दिया।

फिर बैरी ने उससे पीटर पेन-नामक खेल शुरू करने का आग्रह किया।

इसके बाद "The Kid" की समालोचना प्रारम्भ हुई। बैरी ने कहा कि उसमें कठोरता के भाव अधिक दिखाई

न्ते हैं। चार्ली ने उसकी बात को काटते हुए अपने पक्ष में दलीलें देनी प्रारम्भ करदीं, और उनमें बड़ी देर तक वाद-विवाद होता रहा।

उन दोनों में तीन बजे सुबह तक वाद विवाद चलता रहा। चार्ली को उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि वह बैरीको किसी नाटक के लिये नये भाव दे रहा है, और बैरी समझता था कि वह चार्ली को खेल का ढङ्ग बता रहा है।

फिर वह मिस्टर एच० जी० वेल्ज से मिला। उन दोनों में रूस के विषय मे कितनी ही बातें होती रहीं। वेल्ज चार्ली के प्रत्येक प्रश्न का उचित उत्तर देते थे, परन्तु अपनी ओर से कोई भी बात न कहते थे। वेल्ज उसे स्वप्नावस्था में रहनेवाले मनुष्य के समान जान पड़ते थे। परन्तु उसका स्वप्न औरों के समान क्षणभंगुर न था। वह अपने विचारों को कार्य रूप में दिखा देनेवाला व्यक्ति था। वेल्ज ने कहा कि देश को संगठन की सब से बड़ी आवश्यकता है, और उसका उपाय शिक्षा है।

इस प्रकार की बहुत-सी बातें हुईं। चार्ली का समय वेल्ज के साथ बड़े आनन्द से बीता था, परन्तु उसे अब तक यही जान पड़ता था कि वह उससे मिला ही नहीं है।

वह वेल्ज के घर एक सप्ताह तक रहा। वहाँ पर की भेंट सेण्ट जॉन इरविन से हुई। इरविन

पटों को बोलता हुआ बनाने की राय दी। दस वर्ष पहले भी लोगों ने ऐसा विचार किया था।

इरविन को यह विचार बहुत पसन्द था। चार्ली न कहा कि चित्रपट में आवाज़ की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उससे लाभ की बनिस्बत हानि ही अधिक होती है। चित्र का अर्थ स्वाभाविक मूकता है, और यदि हम उसमें आवाज़ मिला दें, तो उसका अस्तित्व ही लोप होजाता है।

चार्ली का समय वेल्स के कुटुम्ब में रहकर बड़े आनन्द से बीतता था। वहाँ रहकर उसने अँग्रेजों क गार्हस्थ्य-जीवन का अच्छी तरह अध्ययन किया। चार्ली ने अपन स्थान पर वापस आकर अपनी यात्रा का वृत्तान्त लोगों पर प्रकट किया। वह लिखता है कि मैंने खूब सैर की, और उस अरसे में मैं जितने मनुष्यो से मिला, उनमें से वेल्स की मुलाकात उल्लेखनीय है।

फिर चार्ली "Limehouse" के लेखक 'टॉमस वर्क' से मिला। उसे उससे मिलने की बड़ी इच्छा थी, क्योंकि 'वर्क' को लन्दन से खूब वाक़फ़ियत थी, और वह स्वय भी वहाँ का एक प्रसिद्ध व्यक्ति था। वर्क एक दुबला पतला मनुष्य था। उसका स्वभाव बड़ा शान्त और गम्भीर था। वह 'मैडम ला मार्क्विस' के समान हाथ और सिर हिला-हिलाकर बातें करता था। उसकी आवाज़ बड़ी मीठी थी।

बर्क ने लन्दन के पूर्वीय नगर का वह दृश्य चैप्लिन को दिखाना स्वीकार कर लिया, जहाँ बैठकर उसने अपनी 'लाइमहाऊस'-नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी थी। वे टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर चले जा रहे थे। बर्क खामोश था। हाँ, कभी-कभी वह अपनी छड़ी से कुछ इशारा अवश्य कर देता था, चार्ली को वहाँ के सारे दृश्य और बर्क की प्रत्येक भाव-भङ्गी पर बड़ा आनन्द आता था।

चार्ली को बर्क का कार्य एक चित्रपट के समान जान पड़ता था। वह उसकी परछाँहीं के प्रत्येक भाव को देखकर सोचता था कि इनके निर्जीव होने का क्या कारण है।

हॉन्सटन-नगर के नागरिकों की ओर से चार्ली के स्वागत का दृश्य देखकर बर्क को बड़ा आनन्द हुआ।

इसके बाद वे दोनों 'बैन्थाल' के हरे-भरे खेतों को पार करते हुए रेटक्लिफ पर पहुँच गये, जहाँ का एक एक पत्थर चार्ली के बाल्य काल से परिचित था।

चार्ली के विचार साम्यवादी हैं, गरीबों के प्रति उसके मन में अतुल स्नेह है। जो व्यक्ति गरीबों के दुःख से दुखित हैं, और जिन्होंने अपना जीवन गरीबों की रक्षा, सहायता और सेवा में अर्पण कर दिया है, चार्ली के मन में उनके लिये आन्तरिक श्रद्धा है। गत १९३१ ईस्वी में जब भारत के अन्यतम राजनैतिक नेता महात्मा गाँधी गोल-सभा में शरीक होने गये थे, उस समय चार्ली ने उनसे

भेंट की थी, और बहुत देर के वार्तालाप मे अपना यह विचार प्रकट किया था, कि वह दरिद्रनारायण गाँधीजी के विचारो की बडी कद्र करता है। इन दोनों महापुरुषो की भेंट पर कुछ दिन तक इँग्लेंएड मे बडी चर्चा रही थी।

चार्ली और टॉकीज

चार्ली चैप्लिन के राजनैतिक विचारों के सम्बन्ध में लोगों की भिन्न भिन्न सम्मतियाँ हैं। कुछ लोगों का विचार है कि वह एक बोल्शेविक है, परन्तु इस धारणा के लिये फिलहाल केवल यही आधार है कि उसने अपने चित्रपट का व्यापार प्रधानतया रूस में ही किया, और उसी से उसका भाग्योदय हुआ।

उसका राजनैतिक और सामाजिक मत चाहे जो भी हो, परन्तु कला के सम्बन्ध में वह अपने पुराने विचार पर ही दृढ है । हम तीन साल के फिल्म-इतिहास को उठाकर यदि देखें, तो स्पष्ट मालूम हो जायगा कि इतने समय में उसमें कितना परिवर्तन हुआ है।

परन्तु यह सब-कुछ होते हुए भी चार्ली के विचारों में कोई परिवर्तन हुआ नहीं दिखाई देता। वह इस टॉकी युग में भी अपनी मूकावस्था में पूर्ण संतुष्ट हैं। "City Lights" खेल शुरू करते समय बहुत से लोगों ने उसे कहा था कि यदि वह अपने इस खेल को बोलता हुआ न बनायगा, तो उसे निश्चय ही असफलता होगी। सारी कम्पनियाँ मूक चित्रपट छोड़कर टॉकी तैयार कर रही थीं। कुछ लोग मूक चित्रपट अवश्य पसन्द करते थे, परन्तु उनकी ओर विशेष अनुराग किसी को न था।

कुछ लोगों ने मूक चित्रपट बनाते रहने का ही निश्चय किया था, परन्तु धीरे धीरे उन्हें भी अपने अन्य साथियों के साथ मिलने को बाध्य होना पड़ा। अब चैप्लिन अकेला रह गया। उसे चिन्ता होने लगी। उसने सोचा कि सभी लोग किस प्रकार मूर्ख हो सकते हैं उसने हमेशा की तरह अकेले बैठकर इस विषय पर खूब सोचा।

उसे अब निश्चय होगया कि गानेवाली मशीन उसे कोई लाभ न पहुँचा सकेगी। उसके सारे पिछले अनु-भव भी यही सिद्ध करते थे। मूक चित्रपटों को पसन्द करनेवाले उसके लाखा प्रेमी उसे यही राय देते थे, और ज्यों-ज्यों टॉकीज की प्रथा बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों उसे अपना पुराना ढङ्ग स्थिर रखने के लिये प्रेरणा करनेवालों की संख्या भी बढ़ती जाती थी।

चैप्लिन स्वीकार करता है कि टॉकीज के द्वारा कहीं अधिक अच्छा कार्य किया जा सकता है, परन्तु वह उसमें कुछ बुराइयाँ भी बताता है। वह कहता है कि हम बोलकर प्रत्येक भाव को लोगों पर अच्छी तरह जता सकते हैं। परन्तु फिर भी उनका न बोलना ही अच्छा है। क्योंकि बहुत-से एक्टर, जो केवल भाव भंगियों द्वारा जनता के हृदय में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर चुके हैं, बोलकर उतनी प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकते। बहुत-सी सुन्दर लड़कियाँ और अच्छे अच्छे एक्टर अब फिल्म कम्पनियों में दिखाई नहीं देते, क्योंकि वे गाने में असमर्थ हैं। कुछ लोग कहते हैं, 'माइक्रोफ़ोन' उनकी आवाज ठीक नहीं पकड़ सकता।

चार्ली चैप्लिन का मूक चित्रपट के विषय में यह कहना कि हम अपनी भाव-भंगियों से अपने विचार प्रत्येक देश और जाति के मनुष्यों पर अच्छी तरह बता सकते हैं, बिल-कुल सच है। और इसीलिये चैप्लिन की फ़िल्में भारत, जापान और जर्मनी आदि देशों में अब तक सर्व-मान्य समझी जाती हैं।

प्रेग में एक जर्मन चित्रपट केवल इसलिये बन्द करा दिया गया था, कि वह जर्मन-भाषा बोलता था। फ्रांस की जनता ने जर्मन और अमरीकन चित्रपटों को इसलिये देखना अस्वीकार कर दिया, कि वे उसकी भाषा नहीं समझते थे। इसी प्रकार अन्य देशों की जनता ने स्वदेशी

भाषा न बोलनेवाले चित्रपटों का बहिष्कार प्रारम्भ कर दिया।

चैप्लिन को बर्नर्ड शॉ के टॉकी पर विश्वास रखने या न रखने से कुछ मतलब नहीं है। हाँ, वह उसकी प्रतिष्ठा करता है, क्योंकि उसने थियेटरों का नाश कर दिया है।

वह लिखता है कि शॉ स्वयं एक बड़ा अच्छा एक्टर है, और मेरे समान ही उसने आइरिश-लेखकों में बड़ा नाम कमाया है। वह अपने कार्यों में मेरी अपेक्षा कहीं अधिक विश्वास रखता है।

संसार के करोड़ों मनुष्य चैप्लिन से भली भाँति परिचित हैं। चैप्लिन का धैर्य, असीम साहस इत्यादि गुण लोगों से छिपे हुए नहीं हैं, और यही कारण है कि संसार उसके प्रति असीम श्रद्धा और प्रेम रखता है।

परन्तु चैप्लिन के खास गुणों को जाननेवालों की संख्या बहुत कम है। जिन्हें उसकी मित्रता का अवसर मिला है, वे ही जानते हैं कि हमारे इस लख में कहाँ तक सत्यता है। उसका स्वभाव बड़ा विचित्र है। उसके मित्रों को उसके जीवन की नवीन घटनाओं से प्राय चकित होना पड़ता है।

उसे लोगों से बहुत मिलना पसन्द नहीं है। वह कभी घण्टों और कई-कई दिनों तक एकान्त में रहता वह अपने मित्रों से निस्संकोच मिलता है, परन्तु

उसके हृदय की थाह पाना कठिन है। टॉमस बर्क लिखता है कि उसने आज तक वैसा एकान्त प्रिय और उदासीन मनुष्य कभी नहीं देखा। परन्तु हमें इस बात पर विश्वास नहीं है। वह धन की क्षणभंगुरता को जानता है। वह पवित्र प्रेम की इच्छा रखता है, परन्तु यह नहीं जानता कि उसका स्थान कहाँ है। उसका उच्च ध्येय, शान्ति, और दृढ़ विश्वास अवश्य उसे एक दिन उसका अभीष्ट सिद्ध करायेंगी।

परन्तु तब तक तो उसका जीवन हमारे लिये एक समस्या ही है।
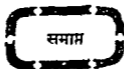
साहित्य-मण्डल की
तीस श्रेष्ठ पुस्तकें:—

उपन्यास-कहानियाँ

१—कण्ठ हार	३)
२—मधुकरी	३)
३—तपोभूमि	२)
४—तलाक़	२)
५—जेल यात्रा	२)
६—षड्यन्त्रकारी	१॥)
७—महापाप	१॥)
८—देहाती सुन्दरी	१॥)
९—यौवन की आँधी	१॥)
१०—कसक	१।)
११—भाभी	१।)
१२—द्वीप निर्माण	१)
१३—चार क्रान्तिकारी	१)
१४—जासूसी कहानियाँ	१)
१५—First Experiment	१)

नाटक

१—सभ्यता का शाप	१।)
२—विनाश की घड़ी	१)

अर्थ-शास्त्र

१—रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन (ज़ब्त)	॥)

इतिहास

१—राजस्थान	२)
२—इस्लाम का विष वृक्ष	३)

विश्व-विहार

[हिन्दी-साहित्य का एक अद्वितीय ग्रन्थ-रत्न]

यह युग विज्ञान का है। संसार के प्रत्येक राष्ट्र में नित नये आविष्कार हो रहे हैं। जो बातें कल हम पता नहीं थीं, वे हमें आज मालूम होगई हैं, जो रहस्य आज अन्धकार के पर्दे में छिपे हुए हैं, उनकी खोज में सैकड़ों मस्तिष्क लगे हुए हैं, और एक-न एक दिन हम उन्हें जान लेने की पूरी आशा रखते हैं।

अखिल विश्व विचित्रताओं का भण्डार है। इसमें असंख्य प्रकार के ऐसे भौगोलिक, खगौलिक, वानस्पतिक, शारीरिक और यान्त्रिक रहस्य अभी तक हमारी आँख से छिपे हुए, जिन्हें जान लेने की कल्पना मात्र से रोमाञ्च हो आता है। उदाहरणार्थ, ग्रह-नक्षत्रों के विषय में हम लोग अत्यन्त उत्सुक रहने पर भी इतना कम जानते हैं कि तारों भरी रात देखकर अपनी विवशता और क्षुद्रता पर मन ही मन अधीर हो उठते हैं। तारे क्या हैं? कहाँ हैं? किन किन पदार्थों के मिश्रण से इनकी व्युत्पत्ति हुई है? उनमें प्राणी रहते हैं—या नहीं? अगर रहते हैं तो उनका स्व-

रँग, चाल ढाल और मानसिक विकास किस प्रकार का है ? इन प्रश्नों का कोई निश्चित उत्तर हमारे पास नहीं।

यह तो ऐसी बातें हैं, जिनके विषय में हम अधिक जानने में असमर्थ हैं। परन्तु ज्ञान के अक्षय भण्डार का जो अति क्षुद्र अंश आज इस जगत् के मेधावी विद्वान् पा सके हैं, हम उससे भी अपरिचित ही हैं। जिन लोगों ने प्राणों की बाज़ी लगाकर, सर्वस्व खोकर ज्ञान के चमकते हुए टुकड़ों का पता लगाया है, और जो आज अत्यन्त सस्ते दर में सर्व साधारण के लिये सुलभ होगये हैं— उनका ज्ञान भी हमें न होना घोर दुर्भाग्य की बात है। जगत् के प्रत्येक सम्पन्न साहित्य में आज उन ज्ञात विषयों पर हज़ारों ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनका एक कण भी इस गुलाम देश की अभागी राष्ट्र भाषा में उपलब्ध नहीं। अकेली जर्मन भाषा में केवल 'सूर्य' के सम्बन्ध में सत्तर हज़ार ग्रन्थ प्रकाशित होचुके हैं। हमने कलकत्ते की 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' में केवल Tobacco और Anti tobacco (तम्बाकू के पक्ष और विपक्ष में) विषय पर सैकड़ों किताबें देखी थीं। जब कभी योरोप और अमेरिका से पुस्तकों के नये सूचीपत्र हमारे पास आते हैं, तो एक ही विषय पर ग्रन्थों की संख्या देखकर हमारी हैरत का ठिकाना नहीं रहता। चाँदी जैसे अति क्षुद्र कीट के सम्बन्ध में विदेशी भाषाओं में आप चालीस चालीस रुपये की एक-एक पुस्तक पा सकेंगे। जर्मनी के एक प्रोफ़ेसर साहब को बर्लिन के एक प्रकाशक ने केवल इसलिये भारतवर्ष भेजा था कि ये भारत के एक प्राचीन और लोप-प्राय

धर्म का अध्ययन करें, और उस पर जर्मन भाषा में एक ग्रन्थ लिखें। इस यात्रा का समस्त व्यय और प्रोफ़ेसर साहब का वेतन भार प्रकाशक के ज़िम्मे था और जब यह पुस्तक छपी, तो उसका दाम शायद एक सौ आठ शिलिंग था! कुछ दिन पहले ही अफ़ग़ानिस्तान में राज्य क्रान्ति होने पर हमने उक्त देश के सम्बन्ध में ऐसी ऐसी पुस्तकें देखी थीं, जिनका दाम पच्चीस पच्चीस और तीस-तीस रुपये था।

जिस समय हम देखते हैं, कि पैंतीस करोड़ भारतवासियों की राष्ट्र भाषा कहाने का गौरव रखनेवाली हिन्दी भाषा में संसार के आधुनिक आविष्कारों की प्रगति पर एक भी अच्छा ग्रन्थ नहीं है, तो हमारा हृदय लज्जा और क्षोभ से भर उठता है। यों कहने और देखने को हिन्दी भाषा में आज नित्य अनेक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, किन्तु हमें अत्यन्त ग्लानि के साथ यह स्वीकार करना पड़ता है कि इन पुस्तकों में से अधिकांश निरर्थक होती हैं, और उनका उपयोग एक ओछे ढंग के मनोरंजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। बहुत से हिन्दी भाषा भाषी प्रौढ़ पाठक भी, जो गम्भीर विषयों के अध्ययन की ओर विशेष रुचि रखते हैं, हमारे साहित्य में अपने मतलब की चीज़ों का अभाव देखकर शान्त हो जाते हैं। हमारी भाषा का प्रचार रुकने का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है।

इसमें सन्देह नहीं, कि हिन्दी के पाठकों की रुचि अभी तक इतनी परिमार्जित नहीं हुई है, कि वे इसके साहित्य से ऊँचे धरा

नय की वस्तुओं में भी पूरी दिलचस्पी ले सकें। जो लोग इसके साहित्य का प्रकाशन करते हैं—निस्सन्देह जिनमें-से एक हम भी हैं—वे अपनी पुष्टि में यही तर्क करते हैं, कि उन्हें पाठकों की रुचि के अनुसार ही पुस्तकें निकालनी पड़ती हैं। किन्तु हमारा विश्वास है कि किसी भी भाषा के पाठकों की रुचि बिगाड़ने या सुधारने का एक बड़ा उत्तरदायित्व प्रकाशकों पर भी है। किसी समय हिन्दी के पाठक 'क़िस्सा तोता-मैना' और 'साढ़े तीन यार' पढ़ा करते थे। जब ऊँचे दर्जे के मौलिक और अनुवादित उपन्यास बाज़ार म आये, तो लोगों की रुचि बदल गई। इधर ऊँचे दर्जे की राजनैतिक और रचनात्मक पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है,—यद्यपि इसकी प्रगति बहुत-सी धीमी है—तो पाठकों की एक खासी संख्या इस प्रकार के साहित्य की शौक़ीन बन गई है। इसीलिये हमारा विश्वास है, कि यदि और विषयों पर ऊँचे दर्जे की पुस्तकें प्रकाशित की जायँगी, तो जल्दी या देर में पाठक अवश्य उनकी तरफ़ आकर्षित होंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन द्वारा हम इसी प्रकार का एक नया साहस कर रहे हैं। इस पुस्तक का प्रणयन अँग्रेज़ी के अनेक तद् विषयक ग्रन्थों के आधार पर किया गया है। विदेशी भाषा में इस प्रकार की हज़ारों लाखों पुस्तकें—अधिक से अधिक क़ीमती हैं। भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी इस प्रकार की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अकेली गुजराती भाषा में इस प्रकार की पुस्तकों की एक एक प्रति का मूल्य सैकड़ों रुपये

तक हो जायगा। बँगला में तो इससे कई-गुनी संख्या में ऐसी पुस्तकें मौजूद हैं। हिन्दी में अब तक मुश्किल-से दो तीन छोटी छोटी पुस्तिकायें प्रकाशित हुई हैं, जिनका लक्ष्य भी अधिकांशतः बालकों का मनोरञ्जन या ज्ञानवर्द्धन ही है। ऐसी अवस्था में हमारा यह साहस हिन्दी साहित्य की जितनी क्षति-पूर्ति करेगा, यह आसानी से समझा जा सकता है। साथ ही पाठकगण इस पुस्तक की संक्षिप्त विषय-सूची देखकर भी उसके महत्त्व का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक में आर्ट पेपर पर छपे दू८७'से सौ तक हाफटोन ब्लॉक और मोटे और मजबूत काग़ज पर नये टाइप में छपे हुए चार सौ से पाँच-सौ तक पृष्ठ होंगे। नमूने के लिये हमने कुछ चित्र विज्ञापन के साथ दिए हैं, जिन्हें देखकर पाठकगण अनुमान कर सकते हैं, कि सारी पुस्तक में कितना व्यय और परिश्रम होगा। सम्पादन, सङ्कलन और चित्रों इत्यादि का लागत का ख्याल रखकर हमने इस ग्रन्थ की पाँच हजार प्रतियाँ छपाने का निश्चय किया है। हम चाहते हैं कि पुस्तक को अधिक से अधिक हाथों में भेजना सम्भव हो सके। इसलिये इस पुस्तक का दाम केवल तीन रुपया रक्खा गया है। अब तक के अनुमान के अनुसार, पाँच हज़ार प्रतियाँ छपवाने पर ही हम इस दुर्लभ ग्रन्थ को इतने कम मूल्य में पाठकों की भेंट कर सकते थे। इसीलिये हमने यह साहसिकतापूर्ण कृत्य कर डाला है। इस पुस्तक की सफलता के लिये हमने अपने वश के सभी

प्रकाश करने का निश्चय किया है। पुस्तक के लगभग सारे ब्लॉक और चित्र तैयार हो चुके हैं, और मैटर प्रेस में दे दिया गया है। प्रस्तुत विज्ञापन की चालीस हज़ार प्रतियाँ छापकर हमने भारतवर्ष के प्रत्येक बड़े बड़े शहर में वितरण कराने का निश्चय किया है, तथा पाण्डुलिपि की कई नक़लें कराकर भारत के कई विश्व विद्यालयों के प्रधानों तथा देश के अनेक गण्य मान्य शिक्षा विशारदों के पास उनकी सम्मति जानने के लिये भेजी गई हैं। इस पुस्तक का एक सुन्दर भूमिका लिखने के लिये हमने पूज्यपाद पण्डित मदनमोहन मालवीय और आचार्य शेषाद्रि महोदय से निवेदन किया है।

परन्तु हमारे इस साहस और परिश्रम की सफलता पाठकों के सहयोग पर निर्भर है। हिन्दी में किसी पुस्तक की एक-साथ पाँच हज़ार प्रतियाँ छपाकर बेचना साधारण बात नहीं है। यदि हमारे कृपालु ग्राहकों ने इस महत्वपूर्ण पुस्तक को अपनाकर हमारी उत्साह वृद्धि की, तो हमें विश्वास है, हम मातृ भाषा के चरणों में ऐसे ऐसे सैकड़ों हज़ारों ग्रन्थ भेंट करेंगे।

विनीत,

ऋषभचरण जैन।

नोट—स्थायी ग्राहकों को इस पुस्तक पर कोई कमीशन नहीं दिया जायगा।

विश्व-विहार

की

संक्षिप्त विषय-सूची

१४—हम पृथ्वी से छूटकर क्यों नहीं जाते।

१५—वृक्षों की चतुरता।

१६—आधी रात की धूप।

१७—सूर्य भगवान्!

१८—नदी के पेंदे में छेद।

१९—शासन बन्दर।

२०—मधुमक्खियों का शयन-गृह।

२१—समुद्री दानव।

२२—एक नई दुनियाँ।

२३—बादलों का महत्व।

२४—सूर्य ग्रहण।

२५—रेत के पर्वत।

२६—मङ्गल ग्रह का सङ्केत।

२७—आकाश मछली।

२८—ग्रामोफ़ोन रेकॉर्ड कैसे बनते हैं।

२९—पृथ्वी का बड़ा भाई।

३०—वज्रपात।

३१—तमाशी चिड़िया।

३२—रेत का गान।

३३—दूरबीन की कहानी।

३४—[illegible]।

३५—सौ मील प्रकाश फेंकनेवाला लैम्प।

३६—सूर्य्य का कलङ्क।

३७—डाकू केंकड़ा।

३८—ढोल गर्जता क्यों है।

३९—कुबड़ा पेड़।

४०—एक पृथ्वी के दस करोड़ चन्द्रमा।

४१—बिल्ली के नौ अवतार।

४२—ज़मीन में ढाई मील ऊँची झील।

४३—पुच्छल तारे क्या है।

४४—चुम्बक शक्ति का चमत्कार।

४५—झरने में पानी कहाँ से आता है।

४६—हवा के विषय में आश्चर्यजनक बातें।

४७—अन्धे आदमी छूकर कैसे ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

४८—मिल में आटा किस तरह पिसता है।

४९—हवा या पानी।

५०—कुछ मनोरञ्जक प्रयोग।

पुस्तक पहली मई को अवश्य प्रकाशित हो जायगी।

डाकू केंकड़ा
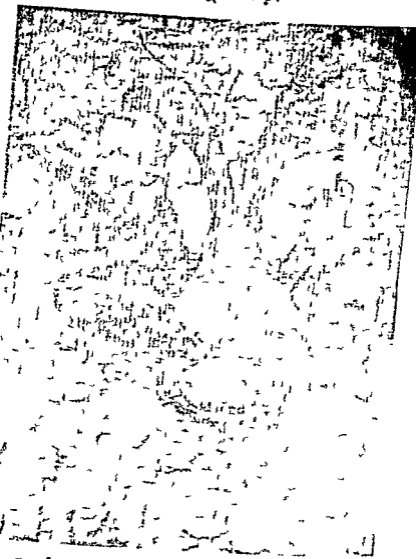
यह भीषणकाय केंकड़ा अपने शिकार की खोज में ऊँचे ऊँचे पेड़ों पर जाता है, और बड़े-बड़े पक्षियों का भक्षण कर जाता है।

आकाश-मछली
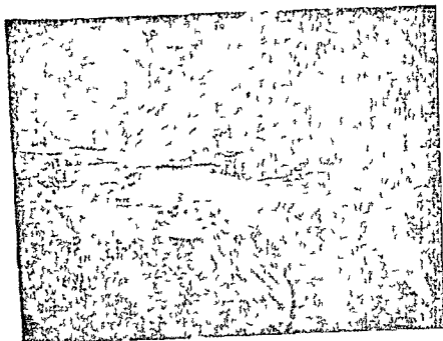
यह मछली पाँच-सौ फ़ीट तक उड़कर जा सकती है। आकाश और समुद के हिंसक जन्तु सदैव उसके प्राणों के ग्राहक रहते हैं।

समुद्री दानव

ऑक्टॉपस नाम का एक विशालकाय सामुद्रिक जन्तु अगम्य जल में
ंकार रूप से भ्रमण कर रहा है।

कुबड़ा पेड़

इस पेड़ की आयु ७२ वर्ष और लम्बाई केवल दो फुट है। इसमें अपनी जाति के बड़े पेड़ों की भाँति ही निर्दोष फल फूल लगते हैं।

नमाज़ी चिड़िया
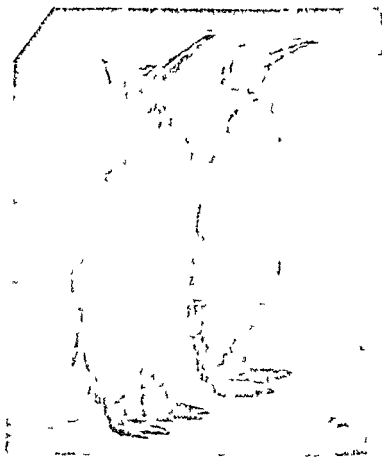
इस विचित्र चिड़िया का मनोरञ्जक विवरण भी 'विश्व विहार' में पढ़िये।